4

मसीह की महानता

कुलुस्सियों 1:15-20

कुलुस्सियों के नाम पत्र में 1:15-20 में परिवर्तन आता है। पौलुस ने अपने सलाम और प्रार्थनाओं की चर्चा खत्म की, जो उसने और उसके साथियों ने कुलुस्सियों की ओर से आरम्भ की थी। फिर वह यीशु की महानता, स्वभाव और पदवी का गुणानुवाद करने लगा। उसने लिखा कि यीशु (1) परमेश्वर का प्रतिरूप, जो नये नियम में दो अन्य स्थानों में बताया गया है (2 कुरिन्थियों 4:4; इब्रानियों 1:3); (2) सारी सृष्टि में पहलौठा; (3) सब वस्तुओं का सृष्टिकर्त्ता; (4) सब वस्तुओं में प्रथम; (5) सब वस्तुओं को स्थिर रखने वाला; (6) कलीसिया का सिर; (7) सृष्टि का सोता; (8) मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहलौठा; (9) सब बातों में प्रधान; (10) सारी परिपूर्णता से परिपूर्ण; और (11) परमेश्वर और मनुष्यजाति के बीच मिलाप का आधार है।

कुछ टीकाकारों का मानना है कि आयतें 15 से 20 आरम्भिक कलीसिया द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला भजन है। माना जाता है कि आयतें 15 से 17, आयतें 18 से 20 का समानांतरण हैं और यह कि थोड़े से बदलाव के बाद इन आयतों में आरम्भिक भजनों में ऐसा एक मापक मिलता है। हमारे संसार में यीशु का आना और जाना 1 तीमुथियुस 3:16 में भी दिखाया गया है जिसे आरम्भिक कलीसिया का भजन माना जाता है। कइयों का मानना है कि पौलुस ने यीशु की महिमा से सम्बन्धित अपनी टिप्पणियों में जोड़ने के लिए प्रसिद्ध कहावतें या आरम्भिक कलीसिया के भजन मिला दिए। (देखें 1 तीमुथियुस 1:15; 3:1; 4:8, 9; 2 तीमुथियुस 2:11-13; तीतुस 3:4-8.)

एक और दावा है कि मसीह पर अपनी शिक्षा देते हुए पौलुस उसके विषय में ज्ञानवादी शिक्षा की गलतियों का उत्तर दे रहा था। ऐसा लगता नहीं है। क्योंकि उस समय केवल ज्ञानवाद का बीज बोया जा रहा था और पूरी तरह से विकसित ज्ञानवाद दूसरी सदी के अंत तक सामने नहीं आया था। तौभी यीशु की पौलुस की चर्चा में वह जानकारी थी जो ज्ञानवादी विचार को नकारता है।

अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहलौठा (1:15)

[15]वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है।

''वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप है'' (1:15)

पौलुस ने यीशु को **अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप** बताया। ''प्रतिरूप'' के लिए यूनानी

शब्द (*eikōn*) का लिप्यंतरण ''icon'' (आइकन) हो सकता है और इसका अर्थ ''समानता'' है। यीशु और इन संतों की सहायता के लिए पूर्वी ओर्थोडोक्स कलीसियाओं में ''आइकन'' पेंटिंगें या मूर्तियां पाई जाती हैं। यीशु पिता का ''आइकन'' है, यानी परमेश्वर का एक मात्र वास्तविक प्रदर्शन और सम्पूर्ण मूर्त। यहां इस्तेमाल किया गया ''प्रतिरूप'' शब्द बाहरी रूप को दिखाने वाली तस्वीर से अलग है जो भीतरी व्यक्ति और व्यक्तित्व को नहीं दिखा सकती। यीशु पिता का सम्पूर्ण प्रतिरूप है, क्योंकि उसमें उसके व्यक्तित्व और ईश्वरीय स्वभाव की सम्पूर्णता है। उसने अदृश्य परमेश्वर को दृश्यमान और समझने के योग्य बना दिया। उसके द्वारा परमेश्वर की परिपूर्णता प्रकट हुई है।

यीशु मनुष्यजाति पर पिता को प्रकट करने के लिए आया (यूहन्ना 1:18)। जो लोग यीशु को देखते हैं, वे पिता को भी देखते हैं (यूहन्ना 12:45; 14:9)। ''वह उसकी महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है'' (इब्रानियों 1:3)। सब बातों में वह पिता का सार, स्वभाव, महिमा और चरित्र है। वह परमेश्वर के होने को दिखाता है। ''वचन'' (*logos*; यूहन्ना 1:1, 14) का विचार यह है कि यीशु सब लोगों के लिए परमेश्वर की वास्तविक अभिव्यक्ति है। जिस समानता की बात पौलुस लिख रहा था वह केवल यह नहीं है कि यीशु जैसा वह शरीर में था वैसा ही वह है, बल्कि यह कि यीशु अनन्तकालिक है।

यीशु यदि स्वयं परमेश्वर न होता तो उसने मनुष्यजाति को पिता को नहीं दिखा पाना था क्योंकि उसने तो पिता के वास्तविक रूप से कम होना था। यहूदी लोगों को इस बात की समझ आ गई थी कि जब उसने परमेश्वर को अपना पिता कहा और परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया, तो यीशु इस बात की पुष्टि कर रहा था कि वह ''परमेश्वर'' ही है (यूहन्ना 10:32-36)।

उस एकता, जो यीशु की पिता के साथ है, से भी यह संकेत मिलता है कि उन दोनों की प्रकृति एक सी है। यह कहने के बाद कि ''मैं और पिता एक हैं'' (यूहन्ना 10:30), यीशु ने यह कहकर कि ''पिता मुझ में है, और मैं पिता में हूं'' (यूहन्ना 10:38; 14:10, 11, 20 भी देखें) इस एकता की प्रकृति को खोलकर समझाया। शारीरिक जीव वैसे एक नहीं हो सकते जैसे पिता और पुत्र एक हैं।

मनुष्य बनने से पूर्व और मनुष्य बनने के बाद के अपने अस्तित्व में यीशु के पास पिता की महिमा और प्रकृति थी और अब भी है। सदा से उसमें पिता वाला व्यवहार, चरित्र और सोच है। अपनी आत्मिक और मानसिक बनावट के हर पहलू में उनमें पूरी सहमति है। इस कारण यीशु पिता की सम्पूर्ण मूर्त है। उसमें और पिता में वही विश्वदर्शन, वही आत्मिक, सनातन और नैतिक विचार हैं। यदि कोई यीशु के दृष्टिकोण और विचार को समझ लेता है, जो वह इन पहलुओं में पिता को भी समझ लेता है। जो लोग यीशु की प्रकृति को ''देखते'' या समझते हैं वे पिता की प्रकृति को ''समझते हैं।''

मनुष्य को परमेश्वर की कुछ झलक मिली थी परन्तु उसे यीशु के आने से पहले उसकी प्रकृति का सम्पूर्ण प्रकाशन नहीं मिला था। यीशु ने थोमा को समझाया, ''जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है'' (यूहन्ना 14:9; देखें यूहन्ना 12:45)। यीशु मानवीय रूप में देहधारी हुआ परमेश्वर था (यूहन्ना 1:14; 1 तीमुथियुस 3:16)।

परमेश्वर अदृश्य है, जिस कारण उसे शारीरिक दृष्टिकोण से समझा नहीं जा सकता है। वह

कलाकारों की शारीरिक कलाकृतियों के द्वारा दिखाया नहीं जा सकता और न ही दिखाया जाएगा। व्यवस्था के दिए जाने के समय परमेश्वर का कोई रूप दिखाई नहीं दिया था। इसी कारण उसकी कोई भौतिक आकृति नहीं बनाई जानी चाहिए (व्यवस्थाविवरण 4:15-18)।

मूसा ने परमेश्वर की पीठ देखी थी पर उसका मुख नहीं देखा था (निर्गमन 33:20-23); क्योंकि कोई उसका मुख देखकर जीवित नहीं रह सकता था। हो सकता है कि परमेश्वर ने मूसा की नज़र बदल दी हो, ताकि वह वो देख सके जिसे मनुष्य की दृष्टि आमतौर पर नहीं देख सकती है। मानवीय आंखों से परमेश्वर को उसकी महिमामयी शान में देखा नहीं गया है और न ही देखा जा सकता है (यूहन्ना 1:18; 6:46)। जब तक आदमी मानवीय देह में है तब तक वह परमेश्वर को नहीं देख सकता (1 तीमुथियुस 6:16; 1 यूहन्ना 4:12)। केवल परमेश्वर की तरह आत्मिक देह में बदल जाने के बाद (1 कुरिन्थियों 15:44; फिलिप्पियों 3:21) ही मसीही व्यक्ति परमेश्वर को और उसके चेहरे को देख सकेगा (1 यूहन्ना 3:2; प्रकाशितवाक्य 22:4)।

''सारी सृष्टि में पहलौठा है'' (1:15)

पौलुस ने यीशु को **पहलौठा** भी बताया। नये नियम में ''पहलौठा'' (*prōtotokos*) का इस्तेमाल और जगह हुआ है (इब्रानियों 1:6; प्रकाशितवाक्य 1:5)। यह अंग्रेज़ी शब्द ''prototype'' के समान है। एडुअर्ड शवेज़र के अनुसार, ''... आवश्यक नहीं कि यह अभिव्यक्ति एक बड़े भाई का संकेत देती है। परन्तु केवल विशेष स्थिति वाले का जो अपने पिता का प्रिय हो।''[1]

इब्रानी परिवार में पहलौठे का रुतबा श्रेष्ठ होता था। उसे पिता की आशीष (उत्पत्ति 27:1-4, 19, 34-37) और जन्माधिकार (उत्पत्ति 43:33) प्राप्त होता था। अपने भाइयों में उसे अगुवे के रूप में सम्मान मिलता था, जैसे याकूब के सबसे बड़े बेटे रूबेन को (देखें उत्पत्ति 37:22, 23)। उसे अन्य पुत्रों को मिलने वाली विरासत की तुलना में दोहरा भाग मिलना था (व्यवस्थाविवरण 21:17)। कई मामलों में चाहे ''पहलौठा'' शब्द का इस्तेमाल पहले जन्म लेने वाले बच्चे के लिए किया जाता था (उत्पत्ति 19:34; 27:19), पर इसका इस्तेमाल सबसे ऊंचा सम्मान या सबसे प्रिय के लिए भी होता था।

इस्राएल को परमेश्वर का पहलौठा कहा गया है (निर्गमन 4:22)। दाऊद को पहलौठा बताया गया है (भजन संहिता 89:27), और एप्रैम को भी (यिर्मयाह 31:9)। मसीही लोगों को भी पहलौठा माना गया है (इब्रानियों 12:23) चाहे उनके जन्म अलग अलग क्रम में हुए हैं। इस्राएल परमेश्वर की आशीषित जाति थी न कि जातियों में पहले जन्म लेने वाली। दाऊद अपने परिवार में आठवीं संतान था (1 शमूएल 16:10, 11) और एप्रैम यूसुफ का दूसरा पुत्र था (उत्पत्ति 41:51, 52)। इन आयतों में ''पहलौठा'' के इस्तेमाल का अर्थ वे लोग नहीं हो सकते जिनका जन्म पहले हुआ है। इसके बजाय ''पहलौठा'' पहलौठे के रुतबे और आशिषों के लिए इस्तेमाल हुआ है।

> ''सारी सृष्टि में पहलौठा'' वाक्यांश का अर्थ यह नहीं हो सकता है कि पुत्र स्वयं भी बहुत बड़ी कतार में लगा पहला, यानी सृष्टि है, जो आयत 16 से बिल्कुल साबित हो जाता है। वह हर प्राणी से पहले, अलग और बहुत ऊंचा किया गया है। पहलौठे के रूप

में वह सब का वारिस और हाकिम है।[2]

कुछ लोग यीशु को पहलौठा मानते हैं, जैसा कि यहां और अन्य स्थानों में बताया गया है (रोमियों 8:29; कुलुस्सियों 1:18; इब्रानियों 1:6; प्रकाशितवाक्य 1:5), क्योंकि वह मरियम का पहला बच्चा, यूसुफ के परिवार में पहलौठा था। परन्तु लगता नहीं ऐसा हो। इस पृष्ठभूमि में पौलुस यीशु को उन सब के सम्बन्ध में, जिन्हें सृजा गया है, पहलौठे की प्रतिष्ठा और सम्मान होने को दिखाता है। पहलौठे के रूप में उसे ''प्राथमिकता और अधिकार या शक्ति'' है।[3]

एच. सी. जी. माऊल ने ध्यान दिलाया है कि भजन संहिता 89:27 ''मसीहा के 'पहलौठा' पद की ... फलस्तीनी यहूदी प्रासंगिकता'' बनाता है।[4] ''पहलौठा'' शब्द के सम्बन्ध में उसने और कहा:

> इसके उपयोगों और इन सम्बन्धों में अध्ययन करने पर, यह शब्द (क) *अस्तित्व की प्राथमिकता* का संकेत देता है ताकि पुत्र सृजित संसार के पूर्णवर्ती के रूप में और होने के सनातन क्रम से जुड़ा होने के रूप में दिखाई दे (अगला संदर्भ देखें) (ख) सनातन जेष्ठाधिकार [पहले होना] के इस अधिकारी से ''सारी सृष्टि'' *पर प्रभुत्व*।[5]

यहोवा विटनस वालों की शिक्षा है कि ''पहलौठा'' होने के नाते यीशु परमेश्वर की सृष्टि में सबसे पहले है। उनका कहना है:

> [यीशु] को परमेश्वर का ''इकलौता'' पुत्र के साथ-साथ ''पहलौठा'' भी कहा गया है (यूहन्ना 1:14; 3:16; इब्रानियों 1:6) इसका अर्थ है कि उसे परमेश्वर के अन्य सभी आत्मिक पुत्रों की सृष्टि से पहले बनाया गया था और केवल वह अकेला है जिसे परमेश्वर द्वारा सीधे बनाया गया था। बाइबल समझाती है कि यह ''पहलौठा'' पुत्र अन्य सब बातों की सृष्टि में यहोवा के साथ था (कुलुस्सियों 1:15, 16)।[6]

यहोवा विटनेस वालों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले न्यू वर्ल्ड ट्रांसलेशन में कुलुस्सियों 1:16 में ''अन्य'' शब्द जोड़ा गया है: ''उसी में [अन्य] सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई।''[7] अभिप्राय यह है कि यीशु को पहले सृजा गया और फिर हर दूसरी चीज़ को बनाया गया। यह बात उसे स्वर्गदूतों की तरह सृजित बात बना देती है। यीशु स्वर्गदूत नहीं है; वह स्वर्गदूतों से ऊपर है और वे उसकी आराधना करते हैं (इब्रानियों 1:4, 6)।

यूनानी भाषा के नये नियम में कहा गया है, *en autō ektisthē ta panta* (''उसमें सब वस्तुओं की सृष्टि हुई'')। ''अन्य'' शब्द न तो यूनानी धर्मशास्त्र में मिलता है और न उस में इसका संकेत है। ''अन्य'' एक अनुचित धर्मशास्त्रीय टिप्पणी के रूप में जोड़ा गया है न कि यूनानी धर्मशास्त्रीय सावधानी से किए गए अनुवाद के रूप में जो कुछ सृजा गया है उसकी हर वस्तु को यीशु ने सृजा है, ''और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई'' (यूहन्ना 1:3)। यह तथ्य निर्णायक ढंग से यह साबित करता है कि यीशु सृजित जीव नहीं है, जब तक उसने अपने आपको न सृजा हो। न्यू वर्ल्ड ट्रांसलेशन के अनुवादकों ने इस बात को समझा कि उनकी थियोलॉजी में उसके सब वस्तुओं की सृष्टि करने की बात एक समस्या है; इसलिए उन्होंने यह अर्थ देने के लिए कि उसने *सब* वस्तुओं की सृष्टि नहीं की, बल्कि अपने

आपको छोड़ *अन्य* सब वस्तुओं की सृष्टि की, ''अन्य'' शब्द जोड़ दिया।

यीशु वह नहीं हो सकता, जिसे सृजा गया या जो परमेश्वर से जन्म लेने वाला हो। वह अनादि है (मीका 5:2) जिसका न आदि है और न अन्त (इब्रानियों 7:3)। वह पहलौठा आदर की सबसे ऊंची स्थिति पाने के अर्थ में है न कि जन्म या सृष्टि में समय के क्रम के अर्थ में पहला।

पौलुस ने यीशु को ''आदि'' कहा (कुलुस्सियों 1:18)। यह बात और यूहन्ना की बात कि यीशु ''परमेश्वर की सृष्टि का मूल कारण है'' (प्रकाशितवाक्य 3:14) यीशु है, इसकी यहोवा विटनेस वालों ने गलत व्याख्या की। प्रकाशितवाक्य 3:14 में ''आदि'' के सम्बन्ध में NASB में सही टिप्पणी करके कहा गया है, ''अर्थात मूल या स्रोत।'' नये नियम की कुछ और आयतों में ''आदि'' का इस्तेमाल इस अर्थ में हुआ है। ''आदि'' (*archē*) शब्द का अर्थ आरम्भ का बिन्दु और क्षण हो सकता है, जब कोई चीज़ आरम्भ हुई हो (मत्ती 24:8, 21)। इसका इस्तेमाल पहले कारण अर्थात आरम्भ के कारण के स्रोत के लिए भी किया गया है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यूहन्ना ने इसका इस्तेमाल हर बार यीशु के लिए किया (21:6; 22:13)। वह ''आदि और अन्त'' अर्थात जिसने हर चीज़ का आरम्भ किया और जो हर चीज़ का अन्त करेगा, है।

प्रकाशितवाक्य की आयतों में यदि ''मूल कारण'' को ''स्रोत'' नहीं मानना है तो ''अन्त'' का अर्थ ''स्रोत'' के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। निष्कर्ष यह होगा कि यीशु का आदि था और उसका अन्त होगा, जो कि सच नहीं है। अर्थ यह है कि यीशु आदि का स्रोत है और ''अन्त'' का भी स्रोत है। वह सारी सृष्टि का ''आदि'' है यानी जिसके कारण सृष्टि की हर चीज़ बनी।

एल्बर्ट आइनस्टाइन को सापेक्षता की थियूरी का आरम्भ कहा जा सकता है। ऐसी बात का अर्थ यह नहीं होगा कि सापेक्षता की थ्यूरी के कारण आइनस्टाइन का आरम्भ हुआ, बल्कि इसका अर्थ यह होगा कि स्रोत के रूप में उसने सापेक्षता की थ्यूरी का आरम्भ किया। यही बात यीशु पर लागू होती है कि वह सृष्टि का स्रोत और कारण है जिसके द्वारा हर चीज़ अस्तित्व में आई।

यूहन्ना 1:14 में यीशु को ''इकलौता'' (*monogenēs*) कहा गया है, जो *mono* जिसका अर्थ ''एक'' (*genos*) जिसका अनुवाद ''वंशज, गुण या किस्म'' के रूप में किया जा सकता है, का मेल है।[8] इकलौता होने के अर्थ में, मूल का विचार इस शब्द में समाविस्ट नहीं है। इसका अर्थ है ''एक तरह का, विलक्षण प्रति, अपने आप में एक वर्ग।'' *Monogenēs* का इस्तेमाल इकलौते पुत्र (लूका 7:12; 9:38), याईर की बेटी (लूका 8:42) और इसहाक (इब्रानियों 11:17) के लिए हुआ है। हाजरा से इश्माएल (उत्पत्ति 16:15) और कतूरा से अन्य छह बच्चों सहित (उत्पत्ति 25:1, 2) अब्राहम के इसहाक के अलावा और पुत्र थे। इसके बावजूद इसहाक अब्राहम का इकलौता पुत्र अर्थात विलक्षण पुत्र, उस श्रेणी में केवल एक था।

यीशु मूल होने के अर्थ में इकलौता था। पिता के साथ अपने सम्बन्ध में अपने आप में ही एक श्रेणी में वह एक तरह का विलक्षण प्रकृति वाला था। यीशु के सम्बन्ध में *monogenēs* शब्द का अनुवाद नये नियम में केवल पांच बार ''इकलौता'' हुआ है (यूहन्ना 1:14, 18; 3:16, 18; 1 यूहन्ना 4:9)। इस अभिव्यक्ति का अर्थ यह नहीं माना जाना चाहिए कि यीशु का कोई आरम्भ था।

इस विचार के समर्थन की इन बातों से अच्छी समीक्षा हो जाती है:

(1) प्रमाणित शब्दकोष इस अर्थ का समर्थन करते हैं (उदाहरण के लिए देखें MM, पृष्ठ 416.; बाऊर, संशो., पृष्ठ 527)। (2) प्राचीन लातीनी MSS में *unigenitus* ''केवल इकलौता'' के बजाय लातीनी *unicus* (''केवल'') से *monogenes* दिया गया है। वलगेट जेरोम ने *unicus* से धर्मशास्त्रीय कारणों यानी इस शिक्षा को पक्का करने के लिए कि यीशु ''ने जन्म लिया, न कि सृजा गया *unigeniteus* (इकलौता) में बदल दिया।'' (धर्मशास्त्रीय दिलचस्पी की कमी वाली आयतों [लूका 7:12; 8:42; 9:38] में उसने यू. *monogenes* के अनुवाद के रूप में *unicus* को रखा।) AV और अगले अंग्रेज़ी अनुवादों पर वलगेट का प्रभाव रहा। (3) इब्रा. *yahid* के लिए *monogenes* के LXX के इस्तेमाल और लूका 7:12; 8:42; 9:38; और 11:17 के नये नियम का इस्तेमाल स्पष्ट रूप में ''केवल'' के अर्थ का समर्थन करता है। (4) 1 क्लेमेंट 25:2 में फीनिक्स पक्षी का हवाला (जो न जन्मा था और न उसे जन्म दिया गया) *monogenes* के रूप में ''अपनी किस्म का केवल एक'' अर्थ की मांग करता है। (5) *monogenes* के रूप में यीशु के विलक्षण होने पर यूहन्ना का जोर *huios* शब्द केवल यीशु के लिए उसके सुरक्षित रखने से नज़रअन्दाज़ होता है क्योंकि विश्वासियों को वह *tekna* अर्थात ''बच्चे'' कहता है।[9]

जो कुछ सृजा गया है यीशु उस सब का स्रोत है। सब के सृष्टिकर्त्ता के रूप में वह उस सब के ऊपर है, जो सृजा गया है। वह परमेश्वर का केवल और विलक्षण पुत्र है।

''सब वस्तुओं का सृष्टिकर्त्ता'' (1:16)

[16]क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं।

यह दिखाने के बाद कि यीशु अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहलौठा है (आयत 15), पौलुस इस शानदार सच्चाई की ओर मुड़ गया कि यीशु सब वस्तुओं का सृष्टिकर्त्ता है। आयतें 16 और 17 में वे मुख्य वाक्यांश हैं जिन्हें समझा जाना आवश्यक है। यदि कोई सृष्टि के साथ यीशु के सम्बन्ध को समझना चाहे।

''क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई'' (1:16)

इस आयत का आरम्भ व्याख्यात्मक खण्ड को दर्शाने वाले शब्द **क्योंकि** (*hoti*) के साथ होता है। इस बात का संकेत देते हुए कि अगली बातें अभी-अभी चर्चा की गई प्रभु की प्राथमिकता और प्रभुत्व का प्रमाण हैं, यह 15 और 16 आयतों को जोड़ता है।

सृष्टि हुई (मूल शब्द *ktizō ektisthē*), का अर्थ है ''शून्य से अस्तित्व में लाया गया।'' यीशु ''पहलौठा'' यानी सारी सृष्टि में श्रेष्ठ है, ''क्योंकि'' या इस कारण कि उसने सब कुछ रचा है। ''घर का बनाने वाला घर से बढ़कर आदर रखता है''(इब्रानियों 3:3)। पहलौठे पुत्र के

रूप में उसका पद और सम्मान उसके **सारी वस्तुओं** की रचना करने के आधार पर है जिसमें ''आकाश और पृथ्वी'' (उत्पत्ति 1:1) और सारा विश्व आता है।

अनुवाद हुआ उपसर्ग **में** यूनानी भाषा में *en* है। कइयों का मानना है कि *en* को अपने मूल अर्थ ''में'' रहने देना चाहिए: ''उपसर्ग 'में' मसीह को 'दायरा' के रूप में दर्शाता है जिसके भीतर सृष्टि का कार्य हुआ।''[10]

नये नियम से सम्बन्धित सभी हवालों में सृष्टि में यीशु की भागीदारी यूनानी उपसर्ग *dia* के द्वारा दिखाई गई है, जिसका अर्थ है ''के द्वारा'' (यूहन्ना 1:3, 10; 1 कुरिन्थियों 8:6; इब्रानियों 1:2)। सब कुछ जो भी रचा गया है उसकी रचना यीशु ''के द्वारा'' हुई। वह, वह माध्यम था जिसके द्वारा सब कुछ रचा गया।

सृष्टि में पिता और पुत्र दोनों शामिल थे। इस तथ्य कि परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की और यीशु ने ''सब वस्तुओं'' की सृष्टि की, अर्थ यह है कि यीशु परमेश्वर है परन्तु पिता नहीं; पुत्र के रूप में उसने रचनात्मक प्रक्रिया में पिता के साथ सहयोग किया।

संसार और जीवन के हर रूप के अस्तित्व के लिए तीन आधार वाक्य दिए गए हैं: (1) उनकी सृष्टि हुई या नहीं हुई। (2) उन्हें डिज़ाइन किया गया या नहीं किया गया (3) अबौद्धिक या बौद्धिक ने उन्हें अस्तित्व में लाया।

यदि संसार की सृष्टि नहीं हुई तो तत्व सनातन काल से और सनातन काल तक है। वैज्ञानिकों ने यह तय किया है कि तत्व सनातन नहीं था। जिसका अर्थ यह है कि इसे सृजा गया होगा। अद्वितीय हाइड्रोजन जो संसार के तारों को जगमगाती है, कम हो रही है। ऊर्जा का ऐसा इस्तेमाल सदा से नहीं होता रहा है और न ही सदा तक हो सकता है। किसी समय संसार को इसकी ऊर्जा दी जानी थी। इसका अवश्य ही आरम्भ हुआ था।

यदि संसार का आरम्भ हुआ था तो या तो इसे डिज़ाइन किया गया था या नहीं किया गया था। संसार के बहुत से पहलू हैं, जैसे खगोलीय ग्रेमो की हलचल, पृथ्वी की परिस्थिति और जीवधारी प्राणियों या वनस्पतियों की प्रकृति डिज़ाइन को ही दिखाते हैं। यदि डिज़ाइन है तो बल जिसने इसे बनाया उसमें डिज़ाइन बनाने की योग्यता होनी आवश्यक है।

संसार का डिज़ाइन या तो बौद्धिक से मिला या अबौद्धिक से। नर और मादा प्रजनन के योग्य होने के लिए एक-दूसरे से अलग कैसे बढ़ सकते थे? विकासवाद के करोड़ों वर्षों की बात इसका उत्तर नहीं है। हर प्रजाति के लिए या तो एक पीढ़ी ने प्रजनन करना या खत्म हो जाना था। प्रकृति के प्रजनन और कई अन्य पहलू बौद्धिक डिज़ाइन को दिखाते हैं, जिसे तत्व पैदा नहीं कर सकता। बुद्धि की सहायता के बिना तत्व प्रतीक के बजाय बेप्रतीति की ओर बढ़ता है। अबौधिक में डिज़ाइन बनाने की योग्यता नहीं है, इसलिए तर्कसंगत निष्कर्ष यही है कि बौद्धिक डिज़ाइनर परमेश्वर ने ही संसार की सृष्टि की।

सृजित संसार के बुनियादी तर्क बाइबल इस प्रकार से देती है:

> आकाश ईश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है (भजन संहिता 19:1)।
>
> क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं

(रोमियों 1:20)।

> क्योंकि हर एक घर का कोई न कोई बनाने वाला होता है, पर जिस ने सब कुछ बनाया वह परमेश्वर है (इब्रानियों 3:4)।

बौद्धिक जीव द्वारा संसार की सृष्टि को ठुकराने के लिए यह *विश्वास* होना आवश्यक है कि तत्व सनातन है, उसमें जीवन के विभिन्न रूपों का डिज़ाइन बनाने की योग्यता है और वह संसार में तरतीब को बनाए रख सकता है। इसके लिए वैज्ञानिक नियमों को नकारना आवश्यक है। कुछ आसान से उदाहरण हैं कि जीवन-जीवन से आता है, ऊर्जा का कम होना ऊर्जा के स्रोत के होने की मांग करता है, बुद्धि-बुद्धि से ही आती है और डिज़ाइन, डिज़ाइन बनाने वाले के कारण है। कथित अविश्वासी के लिए सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सृजनात्मक बुद्धि के बजाय प्रकृति के आश्चर्यकर्मों को मानना आवश्यक है।

ज्ञानवाद जो दूसरी सदी में विकसित हुआ मसीहियत की कुछ बुनियादी शिक्षाओं को नकारता था। इसकी शिक्षा थी कि विशुद्ध आत्मा होने के कारण जो विशुद्ध ज्योति में वास करता है परमेश्वर पूरी तरह से तत्व और पाप के अंधकार से अलग है। उनके विचार में भौतिक देह में आना असम्भव था, और वे तत्व को उसके बनाने को असम्भव मानते थे। वे तर्क देते थे कि परमेश्वर, जो पाप से इतना अलग है, पाप से गंदा हुए संसार की रचना नहीं कर सकता था। उनका मानना था कि भौतिक संसार की ईश्वरों की शृंखला की गलती से, ईश्वर से कम ईश्वर और अन्त में बुरे तत्व से निकलने से बना होगा। संसार के आरम्भ की ज्ञानवादियों की बाद की शिक्षा कुलुस्सियों में पौलुस की शिक्षा से उलट है। उसने पुष्टि की कि यीशु ही है, जिसके द्वारा सब वस्तुओं की सृष्टि हुई, न कि स्वर्गीय दूतों के द्वारा।

''स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की'' (1:16)

यीशु ''सब वस्तुओं'' की सृष्टि में माध्यम था, **स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की।** ''स्वर्ग'' (*ouranois*) बहुवचन आकाश (प्रेरितों 14:17), तारों के आकाश (इफिसियों 4:10; इब्रानियों 4:14; 7:26; 2 पतरस 3:7, 10), और परमेश्वर के अनन्त स्वर्गीय निवास (मत्ती 6:9; इब्रानियों 8:1) को कहा गया हो सकता है। इस शब्द का अर्थ पृथ्वी के बाहर का क्षेत्र भी हो सकता है, जहां अच्छे और बुरे आत्मिक जीव रहते हैं (इफिसियों 1:10)। इस आयत में स्वर्ग ''की'' और पृथ्वी ''की'' में पौलुस की अभिव्यक्ति में हो सकता है, जिसका अर्थ इन स्थानों में रहने वाले *सब* हों। यदि ऐसा है तो इसमें पृथ्वी के वासी और पृथ्वी के क्षेत्र के बाहर रहने वाले हर जीव चाहे वह स्वर्गदूत हों या शैतानी जीव हों, हो सकते हैं।

स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि से पहले कोई बुराई नहीं थी। कोई शारीरिक चीज़ नहीं थी। परमेश्वर का आत्मिक क्षेत्र ही अस्तित्व में था। जब यीशु दोबारा आएगा तो वह सब कुछ पहले वाली मूल स्थिति में फिर से ले आएगा (प्रेरितों 3:20, 21); फिर कुछ भी शारीरिक नहीं रहेगा। केवल सनातन, अदृश्य आत्मिक क्षेत्र ही रहेगा (2 कुरिन्थियों 4:18)। सृष्टिकर्त्ता के रूप में पृथ्वी के जीवों, बुरी आत्माओं और स्वर्गीय सेनाओं सहित सृजी गई हर चीज़ में यीशु श्रेष्ठ है (देखें 1 पतरस 3:22)। पूरे स्वर्ग और पृथ्वी यीशु के अधिकार का एकमात्र अपवाद पिता है

जिसने सब कुछ उसके अधीन किया है (1 कुरिन्थियों 15:27)।

''देखी या अनदेखी'' (1:16)

नंगी आंख के लिए सृजी गई हर चीज़ से **देखी** से **अनदेखी** अधिक महत्वपूर्ण है। हर भौतिक वस्तु अनदेखे कणों से बनती है। बाइबल यह कहने में विज्ञानिक रूप में सही है कि ''यह नहीं कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो'' (इब्रानियों 11:3)। इसका अर्थ यह हो सकता है कि परमेश्वर ने शून्य से सब कुछ बनाया।

यदि पौलुस उस बात की ओर संकेत कर रहा था जो स्वर्ग और पृथ्वी *में* है तो उसने परमेश्वर के और शैतान के दूतों के साथ-साथ पृथ्वी के दिखाई देने वाले वासी और पृथ्वी के क्षेत्र के बाहर दिखाई न देने वाले आत्मिक जीवों को शामिल किया। हमें सनातन, अदृश्य, स्वर्गीय क्षेत्र पर नज़रें लगाकर रखनी हैं (2 कुरिन्थियों 4:18; कुलुस्सियों 3:1)।

सृष्टिकर्त्ता होने के नाते यीशु उस सब से, जो सृजा गया है ऊपर है, चाहे यह मानवीय आंखों को दिखाई दे या उन से ओझल रहे। इस कारण किसी भी चीज़ की जो भौतिक है या जो दिखाई नहीं दे सकती, जैसे स्वर्गीय जीव और अन्य कोई भी जीवन उसकी उपासना या किसी भी प्रकार की श्रृद्धा रखने की आवश्यकता नहीं है। यीशु जो कुछ है, उसके कारण हमें उसके अधीन होना, उसका आदर करना, उसकी आराधना करना और उसकी आज्ञा मानना आवश्यक है (इफिसियों 1:20-23; इब्रानियों 1:6; 5:9)।

''क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं'' (1:16)

यीशु की सृष्टि की अपनी सूची में फिर पौलुस ने **क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार** जोड़ दिया। ''यहां यूनानी भाषा में बिना संक्षिप्त अन्तर के इरादे से चार शब्दों का प्रयोग किया गया है; रोमियों 8.38; 1 कुरिन्थियों 15.24; इफिसियों 1.21, 3.10, 6.12; कुलुस्सियों 2.10, 15; 1 पतरस 3.22 में दी तुलनात्मक सूचियों को देखें।''[11] डेविड एम हे ने यह अवलोकन किया है:

> 1:16 में ''सिंहासन'' का अर्थ नये नियम के किसी और हवाले में अलौकिक शक्तियों के अर्थ में लेने के लिए इस्तेमाल करने की आवश्यकता नहीं लगती है। ''प्रभुताएं'' का इस्तेमाल फिर से केवल इफिसियों 1:21 में हुआ है। अलौकिक ''प्रधान'' के अर्थ वाले शब्द का इस्तेमाल रोमियों 8:38; 1 कुरिन्थियों 15:24; 1:21; 3:10; और 6:12 के साथ-साथ 2:10 और 15 में फिर हुआ है। ''सामर्थ'' के रूप में अनुवाद होने वाला शब्द रोमियों 8:38 को छोड़ अन्य सभी वचनों में ''प्रधान'' के साथ मिलता है। स्पष्टतया हम एक जैसी शब्दावली से व्यवहार कर रहे हैं।[12]

इन चारों शब्दों को शामिल करके पौलुस ने पुष्टि की कि यीशु हर शक्ति से जो पाई जाती है ऊपर है और हर शक्ति उस पर निर्भर है। वह संसार के सबसे ऊपर संस्थानों और जीवों से ऊपर है। पृथ्वी की शक्तियां स्वर्ग के दूतों और शैतान की शक्तियों सहित स्वर्गीय सेनाओं की तरह उसके नीचे हैं (1 पतरस 3:22; इब्रानियों 2:14; 1 यूहन्ना 4:4)। कुलुस्सियों को केवल

उसी की आराधना करने को कहा गया था न कि मूर्तियों के देवताओं या स्वर्गदूतों की पूजा करने को (कुलुस्सियों 2:18)।

''सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं'' (1:16)

स्वर्ग और पृथ्वी केवल यीशु *के द्वारा* सृजे ही नहीं गए थे, बल्कि वे उसी *के लिए* सृजे गए थे। वह भौतिक संसार का स्रोत और इसके अस्तित्व का कारण है।

यूनानी क्रिया रूप *ektistai* **सृजी गई हैं।** सुझाव देता है कि सृष्टि किसी समय बनी और जो कुछ सृजा गया वह अपने इस रूप में यीशु के द्वारा और यीशु के लिए बना रहता है। ''सृजनात्मक कार्य के बने रहने वाले काम की बात करते हुए आयत के अन्त में 'सृजी गई हैं' का काल सम्पूर्ण है।''[13] सारी सृष्टि उसकी महिमा और आदर के लिए है। पिता का यही इरादा था कि उसकी सृष्टि के द्वारा यीशु को पृथ्वी के और स्वर्ग के जीवों के द्वारा ऊंचा किया जाए।

उसी के लिए वाक्यांश में उपसर्ग ''के लिए'' (*eis,* जिसका मुख्य अर्थ ''में'' है)। यहां इरादे या लक्ष्य को दिखाता है।[14] प्रेरितों 2:38 में *eis* का यही अर्थ मिलता है। पतरस ने कहा कि यहूदियों के लिए मन फिराना और पापों की क्षमा के ''लिए'' (*eis*) बपतिस्मा लेना आवश्यक था। यीशु ने *eis* का इस्तेमाल किया, जब उसने कहा कि उसका लहू पापों की क्षमा ''के लिए'' बहाया गया (मत्ती 26:28)।

''क्योंकि उस की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है: उस की महिमा युगानुयुग होती रहे: आमीन'' (रोमियों 11:36)। जिस प्रकार से सृष्टि का उद्देश्य और लक्ष्य यीशु है उसी प्रकार से यीशु के लहू बहाने का मन फिराने का और बपतिस्मा लेने का उद्देश्य और लक्ष्य पापों की क्षमा है। संसार मसीह में केन्द्रित है।

संसार का अस्तित्व यीशु के लिए है; क्योंकि वही है जिसके लिए इसे भेजा गया था। वैसे ही पौलुस लिखता है, ''क्योंकि उस की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए [*eis*] सब कुछ है'' (रोमियों 11:36) और ''... एक ही परमेश्वर है: अर्थात पिता जिस की ओर से सब वस्तुएं हैं, और हम उसी के लिए [*eis*] हैं और एक ही प्रभु है, और हम भी उसी के द्वारा हैं'' (1 कुरिन्थियों 8:6)। यह कहने में कोई विरोधाभास नहीं है कि हमारा अस्तित्व पिता के लिए और पुत्र के लिए है। धार्मिकता की आत्मिक प्रकृति पुत्र के द्वारा और उसकी महिमा के लिए सम्भव बनाई गई है, ताकि वह उन्हें पिता को सौंप सके। जो लोग अब पुत्र के हैं और उसके राज्य में हैं, अन्त में वे ''अपने पिता के राज्य में सूर्य की नाईं चमकेंगे'' (मत्ती 13:43), जब वह राज्य को पिता को सौंप देगा (1 कुरिन्थियों 15:24)।

जो सब वस्तुओं को स्थिर रखता है (1:17)

[17]और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।

''वही सब वस्तुओं में प्रथम है'' (1:17)

इन सब का कि यीशु **सब वस्तुओं में प्रथम है** अर्थ है कि वह सृजी गई वस्तुओं का भाग

नहीं है। ''प्रथम'' (*pro*) का इस्तेमाल समय और दर्जे में प्राथमिकता दोनों के लिए हो सकता है। नये नियम में कम से कम दो बार इसका इस्तेमाल दर्जे के अर्थ में किया गया है (''सबसे श्रेष्ठ''; याकूब 5:12; 1 पतरस 4:8)। शायद पौलुस का इरादा दोनों विचारों का था। आगे दिए गए उसके तर्कों के अनुसार यीशु सबसे ऊपर भी है और सबसे पहले भी।

पौलुस ने इस बात की पुष्टि की कि यीशु सब बातों में प्रथम ''है'' न कि वह सब बातों में प्रथम ''था।'' ''है'' का इस्तेमाल करके उसने संकेत दिया कि यीशु सब बातों से पहले होना जारी रखता है। जे. बी. लाइटफुट ने सही अवलोकन किया है कि वर्तमानकाल ''है'' (*estin*) ''घोषणा करता है कि यह पूर्व अस्तित्व पूर्णतया अस्तित्व में है।''[15] यह कहकर कि वह पिता के साथ ''जगत की सृष्टि से पहले'' था, यीशु ने इसी सच्चाई को दिखाया (यूहन्ना 17:5)।

''वस्तुएं'' हर जीवित और निर्जीव वस्तु सहित जो मनुष्य की नंगी आंख से दिखाई देती हैं या दिखाई नहीं देती, सहित भौतिक या आत्मिक वस्तुओं को कहा गया है। इस तथ्य का कि यीशु सब बातों से पहले है अर्थ यह है कि वह हर बात से सनातन और श्रेष्ठ है। हर चीज़ के आरम्भ के समय वह पहले भी था (यूहन्ना 1:1)। वह सब वस्तुओं से पहले है क्योंकि उसका कोई आरम्भ नहीं था।

''और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं'' (1:17)

यीशु उस सब को बरकरार रखता है, जिसे वह अस्तित्व में लाया। ''वह ... सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से सम्भालता है'' (इब्रानियों 1:3)। पौलुस ने कहा, **और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।** हर वस्तु ''परमेश्वर के वचन के द्वारा'' (इब्रानियों 11:3) अस्तित्व मे आई। वचन जिसके द्वारा सब कुछ सृजा गया, वही वचन है जो अन्तिम दिन की आस के लिए आकाश और पृथ्वी को बनाए रखता है (2 पतरस 3:5-7)। संसार का आरम्भ और बने रहना यीशु पर निर्भर करता है। उसके वचन के द्वारा सब कुछ सृजा गया और अस्तित्व में बना रहता है; और उसके वचन के द्वारा सृष्टि का अन्त हो जाएगा। अब यह बनी रहती है, क्योंकि उसकी सामर्थ का वचन सब वस्तुओं को स्थिर रखता है।

अनुवादित शब्द ''स्थिर रहती हैं'' (*sunistēmi*) इस विचार को दर्शाता है कि यीशु ने अपनी सृष्टि को केवल स्थिर रखने के लिए ही नहीं बनाया बल्कि इसे स्थिर रखता भी है। क्योंकि हर चीज़ उसके द्वारा स्थिर रखी जाती है, इसलिए संसार अस्त-व्यस्त नहीं है। यह यीशु की सामर्थ के द्वारा सम्मान रूप में संचालित किया जाता है। वह एक करने वाली सामर्थ है जो सृजित संसार को बनाए रखती और स्थिर रखती है।

कलीसिया का सिर और श्रेष्ठ (1:18, 19)

[18]और वही देह, अर्थात कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे। [19]क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उस में सारी परिपूर्णता वास करे।

यहां पौलुस संसार के साथ यीशु के सम्बन्ध की अपनी चर्चा से कलीसिया के साथ उसके सम्बन्ध की ओर मुड़ गया। यीशु केवल संसार का ही हाकिम नहीं है बल्कि वह कलीसिया का भी हाकिम है।

''वही देह, अर्थात कलीसिया का सिर है'' (1:18)

परमेश्वर का प्रतिरूप, सारी सृष्टि का पहलौठा और संसार का सृष्टिकर्त्ता होने के अलावा यीशु **देह, अर्थात कलीसिया का सिर** भी है।

इस संदर्भ में पौलुस ने चार बार ''वही'' कहा। यीशु परमेश्वर का प्रतिरूप (आयत 15), सब वस्तुओं में प्रथम (आयत 17), देह का सिर (आयत 18) और आदि है (आयत 18)। अन्य आयतों में पौलुस ने बताया कि यीशु ''कलीसिया, देह'' का सिर है (इफिसियों 1:22, 23; 5:23)। कुलुस्सियों में उसने इस क्रम को उलटा कर दिया, ''देह अर्थात कलीसिया'' (आयत 18क; देखें 1:24)।

देह के साथ सिर का सम्बन्ध महत्वपूर्ण है। सिर देह को संचालित करता, निर्देश देता और इसकी गतिविधियों को चलाता है, जबकि देह अधीनता से सिर की इच्छाओं को मानती है (इफिसियों 5:24)। सिर के रूप में यीशु देह के द्वारा काम करता और अपने उद्देश्यों की पूर्ति करता है। यह देह अर्थात कलीसिया यीशु की इच्छाओं की पूर्ति के लिए है; इसके सदस्य पृथ्वी पर उसके प्रतिनिधियों के रूप में काम करते हैं। सिर को काम करने के लिए देह की आवश्यकता है और देह को अपने कामों को संचालित करने के लिए सिर की आवश्यकता है। अपनी देखभाल और बेहतरी के लिए देह सिर पर निर्भर है। देह के साथ यीशु का सम्बन्ध व्यक्तिगत है। यह किसी इमारत के साथ किसी स्वामी के सम्बन्ध से अलग है। एक व्यक्ति के रूप में कलीसिया तभी काम कर सकती है जब सिर और देह के बीच सही सहसम्बन्ध हो।

यीशु के सिर होने पर ए. टी. रॉबर्टसन की टिप्पणी विचार किए जाने योग्य है:

> संक्षेप रूप में जैसे सिर देह पर हाकिम है वैसे ही वह कलीसिया पर प्रभुत्व और अधिकार करता है। सिर और देह के बीच एक महत्वपूर्ण सम्बन्ध है। परन्तु देह सिर को आदेश नहीं देती है। यह दुख देने वाला हो सकता है और कई बार होता भी है, पर यह सिर के नियंत्रण में ही रहती है और उसके अधीन है। ... देह को सिर की आवश्यकता है और अपनी इच्छा को पूरा करने और अपने आदेशों का पालन करवाने के लिए सिर को देह की आवश्यकता है।[16]

देह और कलीसिया एक ही हैं। रॉबर्टसन ने सही टिप्पणी की, ''यहां पौलुस दो शब्द लगाता है, 'देह' [और] 'कलीसिया' '' जिसमें एक दूसरे का व्याख्यात्मक विरोध करता है ...।[17] इस प्रकार कलीसिया मसीह की देह अर्थात मसीह की कलीसिया है।

पौलुस ने ''देह'' लिखा है न कि ''देहें।'' ''देह'' लिखकर पौलुस ने एक और केवल एक यानी एक कलीसिया का संकेत दिया। देह की आकृति का इस्तेमाल करके कलीसिया की ओर संकेत करने में पौलुस ने हमेशा एक वचन संज्ञा का इस्तेमाल किया, बहुवचन का कभी नहीं (1 कुरिन्थियों 12:24, 25, 27; इफिसियों 1:23; 4:12, 16; 5:23, 30; कुलुस्सियों 1:24;

2:19)। कई बार उसने देह के एक होने की बात की (रोमियों 12:5; 1 कुरिन्थियों 10:17; 12:12, 13, 20; इफिसियों 2:16; 4:4; कुलुस्सियों 3:15)। ''मसीह की देह'' (1 कुरिन्थियों 12:27) या ''उसकी देह'' (इफिसियों 1:23; 5:30; कुलुस्सियों 1:24) लिखते हुए पौलुस ने बताया कि मसीह की देह मसीह की कलीसिया ही है बहुवचन शब्द ''कलीसियाएं'' जैसे ''मसीह की कलीसियाओं की ओर से नमस्कार'' (रोमियों 16:16) में स्थानीय मण्डलियों की बात की गई थी न कि विश्वव्यापी कलीसिया की।

देह की कलीसिया होने की अवधारणा के महत्वपूर्ण अर्थ हैं:

> शायद मसीह की देह के रूप में कलीसिया की अवधारणा के कारण ही हम बेहतरीन ढंग से समझ पाते हैं कि पौलुस विश्वासियों के ''मसीह में'' होने और मसीह के उन में होने की बात को कैसे कह सकता है। क्योंकि उसकी देह के अंग होने अर्थात ''मसीह में बपतिस्मा'' लेने से वे ''मसीह में'' है (गलातियों 3:27); वह उन में है क्योंकि उसी के जीवन से उन्हें जीवन मिलता है। हम यूहन्ना 15:1 में एक और जैविक रूपक में इसके इस्तेमाल की तुलना कर सकते हैं जहां टहनियां दाखलता में हैं पर साथ ही दाखलता टहनियों में है।[18]

''देह'' (*sōma*) का इस्तेमाल लोगों के समूह या इकाई के अर्थ में किया गया है, जैसे ''छात्र संघ'' और ''विधानमण्डल'' वाक्यांशों में सदस्यों की इकाइयों के काम करने का संकेत मिलता है। पौलुस ने कलीसिया को मानवीय देह के साथ (रोमियों 12:4, 5; 1 कुरिन्थियों 12:12, 13), एक संगठित इकाई के साथ मिलाया, जिसके हर सदस्य में योग्यता है कि वह पूरी देह के काम में सहायता कर सकता है।

नये नियम में ''कलीसिया'' या चर्च (*ekklēsia*) लोगों के समूह के लिए है, परन्तु कभी इमारत के लिए नहीं। मसीही शब्दावली में आने से पहले *ekklēsia* का इस्तेमाल यूनानी समाज में लगातार बुलाए जाने वाले राजनैतिक समूह अर्थात नगर परिसद के लिए किया जाता था। नये नियम में इसका इस्तेमाल यीशु के अनुयायियों के पूरे समूह (मत्ती 16:18), मसीह की स्थानीय मण्डलियों (रोमियों 16:16), इलाके की कलीसियाओं (1 कुरिन्थियों 16:1), इकट्ठे हुए मसीही लोगों (1 कुरिन्थियों 14:23), इकट्ठा न होने वाले सदस्यों (प्रेरितों 8:1), और गैर-धार्मिक सभा (प्रेरितों 19:32, 39, 41) के लिए किया गया है। 1:18 में हमें कुलुस्सियों में ''कलीसिया'' शब्द पहली बार मिलता है। आयत 24 की तरह यहां इसका अर्थ यीशु के सभी अनुयायी है न कि कोई विशेष मण्डली। बाद में पौलुस ने दो बार इसका इस्तेमाल स्थानीय मण्डलियों के लिए किया। कलीसिया के साथ यीशु के सम्बन्ध से इसके महत्व का पता चलता है (4:15, 16)।

वह इसका बनाने वाला और मालिक। (मत्ती 16:18), खरीदने वाला (प्रेरितों 20:28), नींव (1 कुरिन्थियों 3:11), सिर (इफिसियों 1:22, 23), और उद्धारकर्त्ता है (इफिसियों 5:23)। परमेश्वर ने कलीसिया के द्वारा अपना ज्ञान प्रकट किया है (इफिसियों 3:10)। यीशु इसे अपने लिए पवित्र और निर्दोष पेश करेगा (इफिसियों 5:25-27)।

कलीसिया यीशु की है क्योंकि उसने इसे अपने लहू से खरीदा है। इस कारण इसे ''मसीह की कलीसियाएं'' (रोमियों 16:16) या ''परमेश्वर की कलीसिया'' (1 कुरिन्थियों 1:2) कहा

जा सकता है, क्योंकि यीशु परमेश्वर है (यूहन्ना 1:1, 2)। किसी मण्डली को किसी नगर की कलीसिया के रूप में पहचाना जा सकता है जैसे ''यरूशलेम की कलीसिया'' (प्रेरितों 8:1)। हमें समाज के विशेष वर्ग से बनी कलीसियाओं के लिए ही बाइबली अधिकार का पता चलता है जैसे ''अन्यजातियों की कलीसियाएं'' (रोमियों 16:4) और ''इलाके की कलीसियाएं भी, जैसे गलातिया की कलीसियाएं'' (1 कुरिन्थियों 16:1)। बाइबल के अन्य वाक्यांशों में ''पवित्र लोगों की कलीसियाएं'' (1 कुरिन्थियों 14:33), ''जीवते परमेश्वर की कलीसिया'' (1 तीमुथियुस 3:15) और ''पहलौठों की कलीसिया'' (इब्रानियों 12:23) मिलते हैं। प्रेरितों 5:11 केवल ... ''कलीसिया'' कहता है।

कलीसिया ''स्वर्ग का राज्य'' (रोमियों 16:18, 19), ''झुण्ड'' (प्रेरितों 20:28), ''उसकी देह'' (इफिसियों 1:22, 23) और ''परमेश्वर का घराना [या परिवार]'' (1 तीमुथियुस 3:15) है। मसीह की देह अर्थात कलीसिया के लोग राज्य के नागरिक (इफिसियों 2:19), झुण्ड की भेड़ें (यूहन्ना 10:16) और परमेश्वर की संतान, उसके परिवार के लोग हैं (गलातियों 3:26, 27)। कलीसिया उन लोगों से बनती है जो यीशु की मृत्यु के द्वारा शुद्ध हो गए हैं। बपतिस्मा लोगों को परमेश्वर के राज्य (यूहन्ना 3:5), अर्थात एक देह में लाता है (1 कुरिन्थियों 12:13), जो कि कलीसिया है (1 तीमुथियुस 3:15)। जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे गए हैं वे स्वर्ग में लिखे गए हैं (इब्रानियों 12:23; प्रकाशितवाक्य 21:27)। वे उस ''पवित्र नगरी'' में प्रवेश करेंगे (देखें प्रकाशितवाक्य 21:2, 10; 22:19)।

कलीसिया का स्वर्गीय भविष्य बाइबल की कई बातों से लिया गया है। यीशु के राज्य के पुत्र पिता के राज्य में सूर्य की नाईं चमकेंगे (मत्ती 13:37-43)। यीशु अपने झुण्ड की भेड़ों को अनन्त जीवन देगा (यूहन्ना 10:27, 28)। वह देह का उद्धारकर्त्ता है (इफिसियों 5:23)। परमेश्वर की संतान के रूप में हम वारिस हैं (रोमियों 8:16, 17; गलातियों 4:7)। हमारी मीरास स्वर्ग में रखी गई है (1 पतरस 1:3, 4)।

मसीह की कलीसिया के स्वीकार्य लोग वे हैं जो उसके आगे समर्पण करते हैं (इफिसियों 5:24)। विश्वासी मसीही व्यक्ति उसके प्रेम और भय के कारण उसकी बात मानता है (यूहन्ना 14:15, 21, 23; फिलिप्पियों 2:12; 1 पतरस 1:17)। यीशु ने कहा, ''यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले; और जहां मैं हूं, वहां मेरा सेवक भी होगा; यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा'' (यूहन्ना 12:26)।

''वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा है'' (1:18)

पौलुस ने लिखा, **वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा है।** आयत 15 की तरह पौलुस ने यीशु को ''पहलौठा'' (''पहलौठा'' और ''आदि'' पर और जानकारी के लिए 1:15 पर चर्चा देखें)। पहले उसने कहा था, ''सारी सृष्टि में पहलौठा''; इस बार उसने कहा, ''मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहलौठा'' (देखें प्रकाशितवाक्य 1:5)।

यीशु मरे हुओं में से जी उठने वाला पहला व्यक्ति नहीं था। एलिय्याह ने सारपत की विधवा के पुत्र को जिलाया था (1 राजाओं 17:21, 22)। एलीशा ने शुनामी स्त्री के पुत्र को जीवन दान दिया था (2 राजाओं 4:34-36)। एलीशा की कब्र में फैंकी जाने वाली लाश फिर से जी उठी

थी (2 राजाओं 13:20, 21)। यीशु ने याइर की बेटी (मरकुस 5:22, 35-42), नाइन नगर की विधवा के पुत्र (लूका 7:11-15) और लाज़र (यूहन्ना 11:43, 44) को मरे हुओं में से जिलाया था। इन्हें यीशु के जी उठने से पहले जिलाया गया था। यीशु चाहे मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहला नहीं था पर वह सबसे प्रसिद्ध है। इस अर्थ में वह मरे हुओं में से जी उठने वाले उन सब लोगों में ''पहलौठा'' है। वह फिर कभी न मरने के लिए जी उठने वाले पहले व्यक्ति के रूप में जी उठा था (1 कुरिन्थियों 15:22, 23)। अपने जी उठने के द्वारा उसने दूसरों के लिए अपने पीछे आने का रास्ता खोल दिया (रोमियों 6:8)।

यह अर्थ निकालने के बजाय कि यीशु कतार में जी उठने वालों में से पहलौठा था पौलुस यीशु की प्राथमिकता पर ज़ोर दे रहा था। ''मरे हुओं में से'' का अर्थ यह है कि मृत्यु में से वह प्राथमिकता के अपने स्थान पर आ गया। पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन यही सच्चाई बताई थी। यीशु दाऊद की गद्दी पर बैठने के लिए मरे हुओं में से जी उठा था (प्रेरितों 2:30, 31), जब वह सब बातों पर राज करने के लिए ऊपर उठा लिया गया (इफिसियों 1:20-23; 1 पतरस 3:22)।

कलीसिया पर यीशु का सिर होना सारे संसार की हर बात में उसके प्रथम होने पर आधारित है। वह केवल संसार पर ही नहीं है, बल्कि कलीसिया का भी सिर है। अब वह संसार के हर संस्थान पर राज करता है।

''कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे'' (1:18)

पौलुस ने आगे कहा, **कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।** ''प्रधान'' (*prōteuō*) नये नियम में केवल यहीं मिलता है। परन्तु इसके विशेषण रूप *prōtos* में इसका इस्तेमाल कई बार हुआ है। इस शब्द का अर्थ ''पहला'' है और अंग्रेज़ी शब्द ''proton'' इसी से निकला है।

यीशु की प्रमुखता स्वाभाविक ही नहीं है, बल्कि यह उसके जी उठने से भी मिली है। यीशु मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहला और प्रमुख है इस कारण उन सब में जो जी उठेंगे, भी उसे प्रमुख स्थान मिला है। मृत्यु पर अपनी विजय के द्वारा वह जीवन का कर्त्ता बन गया है। सब शत्रुओं को पराजित करने वाले विजेता के रूप में (इब्रानियों 2:14) वह अब सब पर प्रधान है और शत्रु के डेरे में कोई विरोधी नहीं है। वह उन सब को जो उसके लिए जीते हैं मृत्यु पर विजय दे सकता है (1 कुरिन्थियों 15:55-57)।

यीशु जब स्वर्ग में ऊपर उठा लिया गया तो उसे पृथ्वी के और स्वर्ग के हर अधिकार के ऊपर कर दिया गया। अब स्वर्ग में और पृथ्वी पर उसके पास सारी शक्ति है।[19] केवल एक जिसके ऊपर वह नहीं है, वह पिता है जिसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया है (1 कुरिन्थियों 15:27)। चाहे वह सब पर हाकिम है परन्तु कुछ शत्रु अभी भी उसके अधीन नहीं हुए हैं (1 कुरिन्थियों 15:25, 26)।

''क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है'' (1:19)

पौलुस ने यीशु में परिपूर्णता को बताया, **... क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है।** ''क्योंकि'' (hoti) का अनुवाद ''इसलिए'' हुआ है, यह आयत 16 से 18 आयतों में यीशु के लिए, जो कहा गया, उससे जोड़ती है। ''प्रसन्नता '' (eudokeo) या अच्छा लगा, वही

क्रिया है, जिसका इस्तेमाल पिता के यीशु के बपतिस्मे पर प्रसन्न होने के समय, यशायाह की भविष्यद्वाणी में से दोहराने और उसके रूपांतर के समय किया गया था (मत्ती 3:17; 12:18; 17:5)।

यीशु को उसका उच्च स्थान देकर पिता ने अपनी सनातन मंशा को पूरा कर दिया। यीशु की पिता से इस ऊंचा किए जाने को लेने की चाह नहीं थी (फिलिप्पियों 2:6), परन्तु उसे अनुग्रहपूर्वक उससे यह मिल गई। यीशु पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए आया, क्योंकि उसका और पिता का एक ही उद्देश्य है (यूहन्ना 10:30)। हर बात में जो यीशु ने की उसका उद्देश्य पिता की इच्छा को मानना था (यूहन्ना 4:34; 5:30; 6:38; इब्रानियों 10:9)। उस पर अपनी मृत्यु में आज्ञापालन की यीशु की इच्छा के कारण पिता ने ''उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया, जो सब नामों में श्रेष्ठ है'' (फिलिप्पियों 2:9)।

यीशु और अपनी संतान के द्वारा भी पिता ''अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव'' डाल सकता है (फिलिप्पियों 2:13)। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर हर घटना के घटने का कारण बनता है। वह हर व्यक्ति को पसन्द चुनने का अधिकार देता है (यहोशू 24:15), जैसे यीशु ने भी गतसमनी बाग में प्रार्थना करते समय संकेत दिया कि वह अपने मन की कर सकता था (मत्ती 26:39)।

''कि उस में सारी परिपूर्णता वास करे'' (1:19)

परमेश्वर की इच्छा या प्रसन्नता यह थी कि **उस में सारी परिपूर्णता वास करे।** ''वास'' (*katoikeō*) वर्तमान सामान्य रूप है जिसका अर्थ है कि यह परिपूर्णता *बनी रहती* है। यीशु के पृथ्वी के वास को ''डेरा'' के द्वारा दिखा गया है (यूहन्ना 1:14)। जो एक बार के निवास का संकेत देता कृदंत रूप है। परिपूर्णता जो यीशु में वास करती है, एक बार की परिपूर्णता नहीं है; यह स्वभाव में निरन्तर है।

यूनानी शब्द *plērōma* से ''परिपूर्णता'' का इस्तेमाल यहां यूहन्ना 1:16 और इफिसियों 1:23; 3:19; 4:13 की तरह परिपूर्णता के लिए किया गया है बाद में कुलुस्सियों के लिए पौलुस इस विचार के लिए वापस आया और उसने उस परिपूर्णता पर ज़ोर दिया जो मसीह में है: ''क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है'' (कुलुस्सियों 2:9)। उस में उद्धार, पुनरुत्थान, सारा अधिकार सामर्थ और पिता का प्रगटावा है। इसके अलावा वर्तमान में उस में बने रहना मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर के हर उद्देश्य को पूरा करना और पिता के स्वभाव का पूरा प्रतिनिधित्व है।

पिता के ईश्वरीय उद्देश्य को यीशु में पा लिया गया है। मनुष्यजाति के पास यीशु को छोड़ और कोई दूसरा सृष्टिकर्त्ता, प्रभु, गुरु, व्यवस्था देने वाला या उद्धारकर्त्ता नहीं है। जो कुछ सृजा गया है उसके सम्बन्ध में यीशु सब में सब कुछ है। उस में सृष्टि से सम्बन्धित परमेश्वर के उद्देश्य पूरे होते हैं। क्रूस पर अपने दुख उठाने के द्वारा उसे मनुष्यजाति के उद्धारकर्त्ता के रूप में सम्पूर्ण, सिद्ध बना दिया गया (इब्रानियों 5:9)। इस सब के अलावा उस में परमेश्वर की पूरी सामर्थ और परमेश्वरत्व का ईश्वरीयता पूर्वक स्वभाव वास करता है, बिना मिलावट के और पूरी तरह से प्रकट किया गया। यीशु में किसी भी गुण की कोई कमी नहीं है।

इस बात में वह पृथ्वी के वासियों की हर आवश्यकता को पूरा करता है, स्पष्ट है कि परमेश्वर ने सारी परिपूर्णता को उस में वास करने के लिए बनाया है। कुलुस्सियों को यीशु को छोड़ और किसी के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। यही बात आज के लोगों के लिए है। यदि उन्हें उद्धार की आवश्यकता है तो यीशु उन्हें पूरा पूरा उद्धार देता है। यदि उन्हें आत्मिक सहायता की आवश्यकता है तो यीशु उन का सहायक है। यदि उन्हें शिक्षा की आवश्यकता है तो सच्चा गुरु केवल यीशु है। वह मनुष्य का एकमात्र उद्धारकर्त्ता (प्रेरितों 4:12) और मध्यस्थ (1 तीमुथियुस 2:5) है। मध्यस्थ के रूप में उसने उन लोगों के लिए जो परमेश्वर से अलग हो गए हैं मिलाप उपलब्ध कराया है। मसीही लोगों के लिए परिपूर्णता यीशु में वास करती है। ''गुरु का काम लोगों को मसीह में उनकी परिपूर्णता ढूंढ़ने में अगुआई करना है: *उस में अपने लोगों को देने के लिए मसीह से बढ़कर कुछ नहीं है।*''[20]

यीशु से अलग होकर आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने की तलाश करने वाली कलीसियाएं उससे जो उनकी आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है भटक गई हैं। वे उससे हटकर किसी अपर्याप्त स्रोत की ओर चली गई हैं। जब इस्राएली परमेश्वर से मूर्तियों की ओर मुड़ गए तो यिर्मयाह ने लिखा, ''क्योंकि मेरी प्रजा ने दो बुराइयां की हैं उन्हों ने मुझ बहते जल के सोते को त्याग दिया है, और उन्होंने हौद बना लिए, वरन ऐसे हौद जो टूट गए हैं, और जिन में जल नहीं रह सकता'' (यिर्मयाह 2:13)।

यीशु के बाहर कोई परिपूर्णता नहीं। यीशु के अन्दर वह सब कुछ है जो परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को परिपूर्णता करने के लिए मसीही लोगों के लिए आवश्यक है। पौलुस ने इस आयत में और कुलुस्सियों 2:10 में नींव रख दी जब उसने लिखा, ''तुम उसी में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।''

मिलाप का आधार (1:20)

[20]और उसके क्रूस पर बहे हुए लोहू के द्वारा मेल मिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा अपने साथ मेल कर ले चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की।

''सब वस्तुओं का उसी के द्वारा अपने साथ मेल'' (1:20)

यह कहने के बाद कि परमेश्वर की परिपूर्णता मसीह में है पौलुस ने आश्वासन दिया कि यीशु के द्वारा पिता ने मिलाप सम्भव बनाया है। **सब वस्तुओं का उसी के द्वारा अपने साथ मेल** दो सच्चाइयों का संकेत देता है: (1) पाप के कारण मनुष्यजाति परमेश्वर से अलग और बाहर की गई है, (2) परमेश्वर ही है, जिसने यीशु के द्वारा मित्रतापूर्वक सम्बन्ध सम्भव बनाया है। पाप मनुष्य और परमेश्वर के बीच एक स्थाई या दीवार बना देता है। यह मनुष्य को परमेश्वर से अलग करता, उसके साथ उसका सम्बन्ध तोड़ देता और उसे परमेश्वर का शत्रु बना देता है (यशायाह 59:1, 2; इफिसियों 2:12, 13; याकूब 4:4)। सारी मनुष्यजाति की आवश्यकता परमेश्वर के साथ सुलह करके उसका मित्र बन जाना है। अब्राहम एक उदाहरण है, जिसके विश्वास और कामों के कारण वह परमेश्वर का मित्र कहलाया (याकूब 2:22, 23)।

मिलाप मसीह की परिपूर्णता में मिलता है। इसका प्रबन्ध परमेश्वर की प्रसन्नता के अनुसार किया गया। हे ने लिखा है:

> आयत 20 में ''मेल-मिलाप करके'' का अनियत शब्द व्याकरणीय अर्थ में ... आयत 19 में ''वास करे'' के समानांतर है, जिसमें दोनों अनियत शब्द ''प्रसन्न हुआ'' के भाव को पूरा करते हैं। परमेश्वर की सारी परिपूर्णता में परमेश्वर को पुत्र में होना और पुत्र के द्वारा काम करना पसन्द आया। यह सूत्र स्पष्टतया 2 कुरिन्थियों 5:19 की बात से बहुत मेल खाती है, ''परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया,'' चाहे इसमें कई बड़े अन्तर हैं। ''मेल मिलाप'' के लिए क्रिया शब्द अलग है; वास्तव में 1:20 में प्रयुक्त शब्द (यू. *apokatalassein*) प्राचीन यूनानी साहित्य में कहीं नहीं मिलता और हो सकता है कि इसे 2 कुरिन्थियों 5:18-19 और रोमियों 5:10 में पौलुस के इस्तेमाल से जोड़ा गया हो (यू. *katalassein*)।[21]

''मेल मिलाप'' का अर्थ बाधाओं को, जो दो पक्षों को अलग करती हैं, हटाना है, ताकि वे मित्र बन सकें। यीशु ने इसे सम्भव बनाने के लिए क्रूस पर मनुष्यजाति के पाप सहकर पाप की रुकावट को दूर करके अपना काम कर दिया है (1 पतरस 2:24)। मनुष्य की ज़िम्मेदारी मिलाप के लिए यीशु की इच्छा को पूरा करना है। परमेश्वर मनुष्य से मसीह *में* मिलता है जहां मिलाप सम्भव किया गया है (2 कुरिन्थियों 5:19)। यीशु ने पाप का श्राप अपने ऊपर ले लिया है और वह मनुष्यजाति के लिए पाप बन गया (गलातियों 3:13; 2 कुरिन्थियों 5:21)। अगला कदम मनुष्य का है, जिसमें व्यक्ति परमेश्वर के साथ मिलाया जाने के लिए मसीह में आना आवश्यक है (2 कुरिन्थियों 5:20; गलातियों 3:26, 27)। परमेश्वर ने यीशु के द्वारा मिलाप का अपना काम पूरा कर लिया है। वह और कुछ नहीं करेगा।

मनुष्यजाति को आदम और हव्वा के पाप के आधार पर परमेश्वर से अलग नहीं किया गया है। हम ने उससे अपना अलगाव स्वयं ही किया है (उत्पत्ति 3:23, 24)। बच्चे संसार में भलाई और बुराई के ज्ञान के बिना आते हैं (व्यवस्थाविवरण 1:39)। उन्हें सही और गलत की पहचान नहीं होती, इस कारण उन में पाप नहीं होता है (यूहन्ना 9:41)। स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है (मत्ती 19:14)। हर व्यक्ति अपने स्वयं के पापों के कारण परमेश्वर से अलग होता है (यशायाह 59:1, 2; याकूब 1:14)। यीशु अपने लोगों का *उन के* पापों से उद्धार करने के लिए आया (मत्ती 1:21)। पतरस ने लोगों को ''*अपने-अपने* पापों की क्षमा के लिए'' (प्रेरितों 2:38) बपतिस्मा लेने को कहा और पौलुस से कहा गया कि ''... बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर *अपने* पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)। किसी को कभी आदम के पाप या आदम से विरासत में मिले पाप की क्षमा के लिए कुछ करने को नहीं कहा गया।

1:6, 23 की तरह ''सब वस्तुओं'' का अर्थ संसार की हर सम्भव वस्तु नहीं है। यूनानी भाषा में केवल विशेषण शब्द ***panta*** मिलता है जिसका अर्थ ''सब'' है। यूनानी धर्मशास्त्र में ''वस्तुओं'' नहीं मिलता परन्तु शब्द के रूप से इसका संकेत मिलता है।

''सब'' में भौतिक संसार, पशु या अन्य जीव नहीं होने थे क्योंकि उन्होंने अपने आपको

परमेश्वर से अलग करने के लिए कोई काम नहीं किया। पौलुस के ''सब'' कहने का अर्थ वे लोग होंगे जिनके पापों ने उन्हें परमेश्वर से अलग कर दिया था और अब उन्हें मिलाप की आवश्यकता थी। यीशु उन लोगों को मिलाने के लिए नहीं आया जिनका परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध है (मत्ती 9:13), बल्कि ''मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है'' (लूका 19:10)। पूरे संसार में केवल मनुष्य ही वे जीव हैं जिन्हें परमेश्वर के साथ मिलाए जाने की आवश्यकता है और जिन्हें मिलाया जा सकता है। ''सब'' का अर्थ यह होगा कि यीशु ने सब लोगों के लिए जो संसार में कभी रहे हैं मिलाप सम्भव बना दिया है।

कुछ लोगों ने ''सब वस्तुओं'' का अर्थ वैश्विक उद्धार पर बल देने के लिए करना चाहा है। पौलुस के कहने का यह अर्थ नहीं था कि हर किसी को बिना शर्त परमेश्वर के साथ मिला दिया जाएगा। मिलाया जाना यीशु के द्वारा सम्भव हुआ है। परन्तु इसे पाने के लिए जवाब आवश्यक है। पौलुस ने मसीही लोगों से परमेश्वर के साथ मिलाए जाने की विनती की (2 कुरिन्थियों 5:18-20)। यीशु उन्हें बचाता है जो उसकी आज्ञा मानते हैं (इब्रानियों 5:9)। वह उन्हें अनन्तकाल के लिए दण्ड देगा, जो उसकी आज्ञा नहीं मानते (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9)। यीशु ने कहा कि ''विनाश'' और ''जीवन'' दो अलग-अलग भविष्य हैं (मत्ती 7:13, 14); ''अनन्त दण्ड'' और ''अनन्त जीवन'' (मत्ती 25:46); ''जीवन का पुनरुत्थान'' और ''दण्ड का पुनरुत्थान'' (यूहन्ना 5:29; KJV)।

वैश्विक उद्धार की गलत शिक्षा कलीसिया के लेखों में आरम्भ में दिखाई जाने लगी। ''पहला मसीही सर्वमुक्तिवादी सम्भवतया ओरिगन था।'' अपनी प्रफुल्लित पुस्तक *De Principiis* में उसने सब के लिए विश्वव्यापी, अन्तिम बहाली के इस विचार का सुझाव दिया।[22]

''उसके क्रूस पर बहे हुए लोहू के द्वारा मेल मिलाप करके, ... वस्तुओं का उसी के द्वारा अपने साथ मेल कर ले चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की'' (1:20)

फिर पौलुस ने **उसके क्रूस पर बहे हुए लोहू के द्वारा** मेल मिलाप करने की बात कही। यीशु ने पापों को क्षमा करने के लिए अपना लहू बहाया था (मत्ती 26:28)। ताकि मनुष्यजाति का परमेश्वर के साथ मेल हो जाए। परमेश्वर और मनुष्य को मिलाने से पहले पाप की दीवार का हटाया जाना आवश्यक था। पृथ्वी पर इस जीवन में शायद कोई नहीं जान सकता कि परमेश्वर बिना लहू बहाए पाप क्षमा क्यों नहीं करेगा (इब्रानियों 9:22)। ''प्राण का बदला प्राण'' का नियम (निर्गमन 21:23; व्यवस्थाविवरण 19:21) से मिलाप हो सकता है। पाप की मज़दूरी मृत्यु है (रोमियों 6:23)। यीशु ने पापों की क्षमा दिलाने, मिलाप कराने, अनन्त जीवन और परमेश्वर के साथ मेल कराने के लिए अपना लहू देकर पाप का श्राप और दण्ड अपने ऊपर ले लिया (गलातियों 3:13)।

यीशु के जन्म के समय स्वर्गदूतों ने शान्ति का गीत गाया था: ''आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो'' (लूका 2:14)। यीशु ने प्रतिज्ञा की कि वह अपने समय में अनुयायियों को शान्ति देगा (यूहन्ना 14:27; 16:33)। परमेश्वर के साथ शान्ति या मेल उन्हें मिलता है जो ''कल्याण'' करने के लिए ''महिमा और आदर और कल्याण हर एक को मिलेगा, जो भला करता है, पहिले यहूदी को फिर यूनानी को''

(रोमियों 2:10)। विश्वास से प्रेरित होते हैं (रोमियों 5:1; इब्रानियों 11:6) आत्मिक सोच वाले लोगों को शान्ति मिल सकती है (रोमियों 8:6), परन्तु बुराई करने वालों को शान्ति का मार्ग पता नहीं होता (रोमियों 3:17)। मिलाप के द्वारा शान्ति मनुष्यजाति के लिए शुभसमाचार के रूप में दिखाई जाती है (रोमियों 10:15; इफिसियों 2:17)।

आयत के अन्त में पौलुस ने दोहराया, **उसी के द्वारा** और फिर जोड़ा **चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की।** ''वस्तुओं'' मानवीय जीवों से अधिक प्रासंगिक हो सकती हैं, परन्तु सृजी गई ''वस्तुओं'' को छुड़ाने के लिए यीशु का लहू क्यों आवश्यक होना था? उसका लहू पाप क्षमा करने के लिए बहा था (मत्ती 26:28)। पाप केवल मनुष्य ने किया था, सारी सृष्टि ने नहीं।

हमारी व्याख्या यह है कि आदम के पाप के कारण हर चीज़ पर जो सृजी गई थी, चाहे वह पृथ्वी हो, सौरमण्डल और आकाश के तारे, हर चीज़ पर छाप दिया गया था। यीशु ने क्रूस के द्वारा इस श्राप को हटाकर आदम के पाप से बनी विसंगति को दूर करना सम्भव कर दिया। अन्तिम परिणाम सब वस्तुओं की बहाली होगा। विश्वव्यापी एकता और शान्ति थी जो श्राप से पहले थी (उत्पत्ति 3:17) सृष्टि में बहाल हो जाएगी (रोमियों 8:18-23)। हरबर्ट एम. कारसन ने सुझाव दिया है कि पौलुस के कहने का अर्थ था:

> परन्तु यह मिलाप केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं है। यह सृजे गए जीवों के पूरे क्रम पर लागू होता है। यह महत्वपूर्ण है कि पौलुस यहां ''सब मनुष्य'' नहीं कहता जो कि उसकी सामान्य शिक्षा के उलट होता, बल्कि *सब वस्तुओं* कहता है। यह वाक्यांश अनिश्चित है और परमेश्वर की योजना की पूर्णता का सुझाव देता है। पापी व्यक्ति को केवल मिलाया ही नहीं जाता, बल्कि सृजित क्रम को जिसे पाप के कारण व्यर्थ के अधीन किया गया है (देखें [रोमियों 8:20-23]) क्रूस पर प्रायश्चित के सामर्थपूर्ण कार्य के फल में भागीदार भी होता है।[23]

पौलुस ने यह नहीं लिखा कि यीशु की मृत्यु से पृथ्वी पर की वस्तुओं का स्वर्ग की वस्तुओं *से* मेल हो गया, जैसा कि कइयों ने निष्कर्ष निकाला है। उसकी मृत्यु से पृथ्वी *पर* की वस्तुओं के लिए और स्वर्ग *में* की वस्तुओं के लिए मिलाप दिया गया। इसका अर्थ यही होगा कि यीशु ने उन सब के लिए मिलाप उपलब्ध करवाया, जिन्हें मिलाप की आवश्यकता है। जिन्होंने परमेश्वर को नाराज किया है मिलाप की आवश्यकता केवल उन्हीं को है, इसलिए भौतिक वस्तुओं, पशुओं और अन्य जीवित प्राणियों को इसमें से निकाला जा सकता है। जो लोग परमेश्वर को नाराज कर सकते हैं वे दुष्टात्माएं, स्वर्गदूत और लोग ही हैं। अच्छे स्वर्गदूतों को मिलाप की आवश्यकता नहीं है। बुरे स्वर्गदूतों और बुरी आत्माओं को मिलाप की आवश्यकता है परन्तु उन्हें मिलेगा नहीं। मिलाप के लिए केवल पाप से भरी मनुष्यजाति ही रह जाती है।

यीशु के द्वारा पृथ्वी पर पाप से भरे मनुष्य के लिए मिलाप उपलब्ध करवाए जाने की बात को समझने में शायद कोई परेशानी नहीं है परन्तु स्वर्ग में यीशु के द्वारा मिलाप ढूंढ़ने की आवश्यकता किसे है? कोई भी दूषित वस्तु स्वर्ग में (प्रकाशितवाक्य 21:27) जो परमेश्वर का निवास स्थान है नहीं जा सकती। इसके अलावा यह विचार कि यीशु के छुटकारा दिलाने के कार्य के द्वारा सम्भव मिलाप उन स्वर्गीय जीवों को दिया जाता है जिन्होंने पाप किया था। पाप

से भरे स्वर्गदूतों के सम्बन्ध में पतरस की बात का विरोधाभास होगा। उन्हें न्याय के लिए ठहराने के कारण अंधकार में बांधकर रखा गया है (2 पतरस 2:4)। वे *स्वर्ग में* नहीं है क्योंकि उन्हें अपने अन्तिम न्याय की प्रतीक्षा करने के लिए ''नरक में'' (*tartarōsas*) मूल में ''टारटरस में फैंक'' दिया गया है। यहां पर ''न्याय'' का अनुवाद ''दण्ड'' बेहतर हो सकता है जैसा कि मत्ती 23:14 में है (देखें मरकुस 12:40; लूका 20:47; 23:40; रोमियों 3:8; 13:2; 1 तीमुथियुस 3:6; 5:12; यहूदा 4)।

यह दावा करते हुए कि मिलाप ने ''सृजित क्रम'' है कारसन ने इस तथ्य को नज़रअन्दाज़ कर दिया कि पौलुस ने ''पृथ्वी'' या ''स्वर्ग'' नहीं बल्कि पृथ्वी ''पर'' और स्वर्ग ''में'' कहा। मिलाप उनके लिए है जो पृथ्वी *पर* और स्वर्ग *में* है न कि पृथ्वी और स्वर्ग के लिए। पृथ्वी और आकाश टल जाएंगे (मत्ती 24:35) और जल जाएंगे (2 पतरस 3:10-12)। आदम और हव्वा के पाप के कारण पृथ्वी को दिए गए श्राप (उत्पत्ति 3:17) को यीशु नहीं मिलाएगा।

कारसन ने लिखा कि पौलुस ने ''पृथ्वी के नीचे'' शामिल नहीं किया। जैसे उसने फिलिप्पियों 2:10 में किया। ''पृथ्वी के नीचे'' का अर्थ बुराई की शक्तियां हैं। यदि वह इन्हें शामिल कर लेता तो पौलुस यह सिखा रहा होता कि यीशु ने शैतान, उसकी दुष्ट आत्मा वाले दूतों और सब बुराई या बुरे कर्म करने वालों के लिए मिलाप उपलब्ध करवाया है।

एक सम्भव लगने वाली उलझन यह है कि पौलुस के कहने का अर्थ था कि यीशु ने क्रूसारोहण से पहले मर जाने वाले लोगों के साथ-साथ पृथ्वी *पर* के लोगों के लिए मिलाप सम्भव बनाया। अपने जीवन काल में इन लोगों ने परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की कोशिश की, परन्तु यीशु की मृत्यु के द्वारा मिलाप सम्भब बनाए जाने से पहले ही वे मर गए पृथ्वी के बाहरी क्षेत्र, अधोलोक के संसार में स्वर्गीय क्षेत्र *में* थे। उसके बलिदान के द्वारा उन्हें परमेश्वर से मिलाया गया है (देखें रोमियों 3:25; इब्रानियों 9:15)। जिस प्रकार पतरस ने दाऊद के लिए कहा (प्रेरितों 2:34), ये लोग स्वर्ग में अभी परमेश्वर के साथ नहीं हैं। परन्तु वे पृथ्वी के दायरे से बाहर हैं इसलिए उन्हें आकाश में होने की बात कही जा सकती है (इफिसियों 6:12)।

पृथ्वी पर के लोगों के लिए epi ''पर'' और स्वर्ग *में* के लोगों के लिए en (''में'') दो अलग अलग यूनानी उपसर्गों का इस्तेमाल करके पौलुस स्थितियों के बीच अन्तर कर रहा होगा। पौलुस पृथ्वी के मिलाए जाने की बात नहीं कर रहा बल्कि ''पृथ्वी पर'' रहने वाले लोगों की बात कर रहा था। उसके कहने का अर्थ स्वर्ग नहीं बल्कि स्वर्ग के लोग है, यानी अधोलोक में रहने वाले, पृथ्वी के क्षेत्र के बाहर का स्थान परन्तु वह स्वर्गीय क्षेत्र नहीं जहां परमेश्वर है।

कुछ विद्वान आयतें 15 से 20 को यीशु से सम्बन्धित ''भजन'' मानते हैं, परन्तु इसके प्रबन्ध पर उन में बहुत अन्तर है। यह भजन का काम करता था या नहीं पर इस भाग ने पौलुस की अगली टिप्पणियों के लिए आधार बना दिया।

हे ने यीशु के श्रेष्ठ गुणों के महत्व को समझाया:

> प्रतिरूप के रूप में पुत्र का विवरण (15) मसीही लोगों के अपने सृष्टिकर्त्ता के प्रतिरूप को पहनने की बात के लिए तैयार करता है (3:10, 11)। इस दावे को कि वह कलीसिया का सिर है (1:18) 2:10, 19 में और विस्तार से समझाया गया है कि वह कलीसिया

का सिर है (1:18) यह बात कि पुत्र हर बात में प्रथम है (1:18) 1:28; 2:3, 6-7, 17, 19; 3:3, 11; 4:1 की ऐसी ही घोषणा चेतावनियों के लिए मार्ग तैयार करता है। उद्धार के स्रोत के रूप में मसीह की मृत्यु का दावा 1:20 को 1:14, 22; 2:11-15; के साथ और 3:13 के साथ जोड़ता है। यह विचार कि कलीसिया मसीह की देह है 1:24 और 2:19 में मिलता है। मसीह के साथ मरने और जी उठने के दावे (2:12-13, 20; 3:1, 5) ''मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहलौठा'' का अर्थ स्पष्ट करते हैं (1:18)। 1:16 में स्वर्गीय शक्तियों का हवाला 2:8, 15, 18 और 20 में अलौकिक जीवों के हवाले में सुनाई देता है। 1:15-20 में ज़ोर दिया गया पुत्र का विश्वव्यापी महत्व इस बात को समझाता है कि सुसमाचार का हर जगह प्रचार क्यों किया जाना आवश्यक है (1:6, 23, 27-28; 3:11; 4:3-6)। अन्त में पुत्र के द्वारा परमेश्वर की सृष्टि के रूप में भजन का संसार का सकारात्मक विचार 2:16-23 में झूठे शिक्षकों के तप और 3:5-4:6 में संसार में जीवन की सकारात्मक शिक्षा के विवादात्मक विरोध का जिम्मा लेता है।[24]

प्रासंगिकता

मसीह की महानता (1:15-19)

पौलुस ने मसीह का अधिकार और प्रकृति बताते हुए उसकी ममता का वर्णन किया। उसने यह जानकारी कुलुस्से के लोगों को मसीह के वफ़ादार बनने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए दी। मसीह की महानता की चर्चा को चार श्रेणियों में बांटा जा सकता है: वह कैसा है, उसने क्या किया है और क्या कर रहा है, उसकी पदवी, और अधिकार का उसका श्रेष्ठ स्थान।

(1) *मसीह कैसा है।* वह परमेश्वर का प्रतिरूप है (देखें 2 कुरिन्थियों 4:4)। यीशु इस संसार में पिता की महिमा दिखाने के लिए और यह प्रकट करने के लिए आया कि परमेश्वर कैसा है (यूहन्ना 1:14, 18)। उसने प्रेरितों को बताया कि जिसने उसे देखा है उसने पिता को भी देखा है (यूहन्ना 12:45; 14:9)। ऐसा इसलिए है क्योंकि यीशु पिता में है और पिता यीशु में है (यूहन्ना 10:38; 14:10, 11; 17:21)।

परमेश्वर को कभी भी किसी ने नहीं देखा है (यूहन्ना 1:18) क्योंकि ''वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा, और न कभी देख सकता है'' (1 तीमुथियुस 6:16)। परमेश्वर को देखा नहीं जा सकता है, इस कारण उसने यीशु के द्वारा जो हर बात में पिता के जैसा ही है, अपने आपको दिखाया है (इब्रानियों 1:3)।

परमेश्वर ने अपने आपको अपनी सृष्टि के द्वारा जो उसकी सामर्थ और महिमा को दिखाती है, प्रकट किया है (भजन संहिता 19:1; रोमियों 1:20)। परन्तु केवल इसी से उसके पूरे स्वभाव का पता नहीं चल जाता। परमेश्वर की प्रकृति के बारे में हम यीशु की प्रकृति की गहराई में समझ पाकर जान सकते हैं।

परमेश्वर को जानना हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण ज्ञान है। हमारा अनन्त जीवन हमारे उसे जानने पर निर्भर है (यूहन्ना 17:3)। उसे जानने पर हम उसकी आज्ञा मानने के लिए प्रेरित होते और पाप करने से बचते हैं (1 यूहन्ना 2:3-5; 3:6)। मानवीय अस्तित्व की ऊंचाई परमेश्वर

को जानने से मिलती है (यिर्मयाह 9:23, 24)। यीशु में परमेश्वर का स्वभाव है इसलिए हमें उसे वही आदर देना चाहिए जो हम पिता को देते हैं (यूहन्ना 5:23)।

(2) *यीशु ने जो किया है और जो कर रहा है।* सब वस्तुओं के सृष्टिकर्त्ता होने के कारण यीशु को भयदायक ढंग से लेना आवश्यक है। वह पिता के साथ आदि में था और उस में पिता का ईश्वरीय स्वभाव है। यूहन्ना ने सुसमाचार के अपने विवरण का आरम्भ यह प्रकट करते हुए किया कि यीशु ने हर चीज़ को रचा है।

यह कहकर कि वह सृष्टि का आरम्भ था (आयत 18), पौलुस यह नहीं सिखा रहा था कि यीशु को सृजा गया था; बल्कि वह यह बता रहा था कि वही था जिसने आरम्भ का आरम्भ किया। वह सृष्टि का स्रोत आरम्भ है। यीशु आरम्भ में रचा गया सबसे पहला नहीं था, क्योंकि वह सब वस्तुओं से पहले है, सब वस्तुएं उसी ने रची और आरम्भ के समय वह पिता के साथ था।

वह अपने सामर्थ के वचन से सब वस्तुओं को बनाए रखता है (इब्रानियों 1:3)। वही वचन जिसके द्वारा उसने सब वस्तुओं को रचा (इब्रानियों 11:3) है जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को बनाए रखता है। उसका वचन इस वर्तमान संसार को इसके विनाश के दिन तक सम्भाले रहता है (2 पतरस 3:5-7)।

यीशु ने अपने वचन के द्वारा सब वस्तुओं की सृष्टि करके (इब्रानियों 4:12)। इसकी सामर्थ को दिखा दिया है। इसी के आधार पर हम उसके वचन में भरोसा रख सकते हैं। वह वही कुछ कर सकता है, जो उसने कहा है कि वह करेगा। उसके वचन के द्वारा हमें उद्धार मिल सकता है (याकूब 1:21) और वे सभी आशिषें मिल सकती हैं जो उद्धार के द्वारा मिलती है।

(3) *यीशु की पदवी।* सब वस्तुएं उसी के द्वारा रची गई थीं। पिता मसीह के ऊंचा किए जाने का इच्छुक था जिसकी योजना सृष्टि से पहले बनाई गई (प्रेरितों 2:23; इफिसियों 1:4; 1 पतरस 1:19, 20)। यीशु को इस घटना के द्वारा महिमा दी जानी थी। उसका अन्य सब लोगों से बढ़कर आदर पाना मनुष्यजाति के उद्धार के लिए उसकी मृत्यु के द्वारा लाए जाने के लिए पहले से ठहराया गया था (फिलिप्पियों 2:8-11)।

हमारा अस्तित्व यीशु के लिए है न कि हमारे अपने लिए। हमारे जीवनों का उद्देश्य उसकी महिमा, आदर और सेवा करना है। हमें उसकी महिमा के लिए रचा गया था। अपने नमूने के द्वारा, वैसे रहकर जैसे यीशु रहता था (1 यूहन्ना 2:6) हम दूसरों को उसकी प्राकृतिक की सुन्दरता को दिखाते हैं।

वह सब वस्तुओं से पहले था। वह आदि में बल्कि अनन्तकाल से पिता के साथ था (मीका 5:2)। यह वह धारणा कि कोई जीव आरम्भ या अन्त के बिना हो सकता है हमारी समझ से बाहर है। हर चीज़ जिसे हम देखते हैं न तो वह सदा से थी और न सदा तक रहेगी।

यीशु स्वर्ग के अदृश्य क्षेत्र में है (2 कुरिन्थियों 5:1)। हम अपने अनन्त जीवन के लिए उस पर निर्भर हो सकते हैं क्योंकि वह अनन्त है। अनन्त जीवन उन लोगों के लिए है जो मसीह में हैं (यूहन्ना 3:36; 1 यूहन्ना 5:11, 12)। बपतिस्मा लेने पर हम उस में आते हैं (रोमियों 6:3; गलातियों 3:27)।

सारी परिपूर्णता उसी में वास करती है। यीशु ही है जो आने वाला जीवन दे सकता है और वर्तमान में बहुतायत का जीवन देता है (यूहन्ना 10:10)। सारे संसार में हर कोई उसी पर निर्भर

है। उसी कारण हमें अपने जीवनों में उसके राज्य को पहल देकर उस में बने रहकर उसकी सेवा करनी चाहिए (मत्ती 6:33)।

(4) *अधिकार का यीशु का श्रेष्ठ स्थान।* सारी सृष्टि में पहलौठा और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहलौठा है ताकि वह हर बात में सबसे पहले हो। यहूदी परिवार में पहलौठे पुत्र को सबसे आदर का स्थान दिया जाता था। मसीह को सृजी गई हर चीज़ के सम्बन्ध में यह पद मिला है। केवल पिता ही उसके अधीन नहीं है (1 कुरिन्थियों 15:27)। शेष संसार को उसके अधीन किया गया है।

चाहे वह मर गया था पर अब वह जीवित है क्योंकि उसने मृत्यु पर विजय पा ली है। उसे पहला स्थान मिलने के कारण उसे उन सब से श्रेष्ठ पद दिया गया है जो मर गए हैं। पौलुस ने इसी सच्चाई को बताया कि अपने पुनरुत्थान और ऊपर उठाए जाने के द्वारा उसे हर किसी के ऊपर लगाया गया और हर किसी को उसके कदमों के नीचे किया गया।

मृत्यु उसे कब्जे में नहीं रख पाई (प्रेरितों 2:24)। उसके पास अपना प्राण देने की शक्ति और इसे फिर से ले लेने की शक्ति थी (यूहन्ना 10:18)। अपने पुनरुत्थान के द्वारा उसने हमें आश्वस्त किया है कि उसके पास मरे हुओं को जिलाने की सामर्थ है।

यीशु के अधिकार के साथ कोई मानवीय अधिकार मुकाबला नहीं कर सकता। हमें अपने प्रभु और स्वामी के रूप में उसका आदर करना और उसकी बात मानना आवश्यक है क्योंकि कोई स्वर्गदूत या मानवीय जीव यीशु का विरोध नहीं कर सकता। यदि कोई ऐसी बातें सिखाता है जो मसीह के उसकी प्रेरणा पाए प्रतिनिधियों के द्वारा दिए गए प्रकाशन के उलट हो, तो उस व्यक्ति के ऊपर स्वर्ग का श्राप पड़ता है (गलातियों 1:8, 9)।

मसीह देह अर्थात कलीसिया का सिर है। जो वह है उसके कारण कलीसिया के लिए सिर के रूप में उसका आदर करना आवश्यक है। मानवीय देह के साथ मानवीय सिर का सम्बन्ध यीशु और कलीसिया के बीच पाए जाने वाले सम्बन्ध को दिखाता है। हम जो मसीह की देह अर्थात उसकी कलीसिया के अंग हैं, हमें अपने आत्मिक सिर के रूप में अपने आपको उसके सुपुर्द कर देना चाहिए (इफिसियों 5:24)। हमें किसी भी अन्य व्यक्ति या समूह को वही आदर दिखाने का कोई अधिकार नहीं है जो हम यीशु के लिए दिखाते हैं। हमारे ऊपर सिर के रूप में केवल यीशु को ही स्वीकार किया जाना चाहिए।

संक्षेप में, मसीह परमेश्वर का प्रतिरूप है, जिसके द्वारा और जिसके लिए सब वस्तुओं की सृष्टि हुई, और वह अधिकार के श्रेष्ठ काम पर बना हुआ है। इसके कारण हमें उसका आदर करना, उसे जानना, और उसकी शक्ति में भरोसा करना आवश्यक है।

मसीह के गुण (1:15, 17-19)

मसीही लोगों के जीवन संसार में यीशु के रुतबे के आस-पास बनने आवश्यक है। इससे न केवल हमारी सोच बल्कि हमारे काम भी प्रभावित होने चाहिए। जो यीशु है उसके कारण हमें उस में पूरी निष्ठा होनी आवश्यक है। उसके प्रति समर्पण के यह दर्जा होने पर हम झूठे शिक्षकों, विनाशकारी व्यवहारों (दुराचार) और भटकाने वाले व्यवहारों अर्थात ऐसे कामों से जो अपने आप में गलत नहीं हैं परन्तु हमें उस सेवा से जो मसीह की करनी आवश्यक है दूर करते

हैं, बचेंगे।

यीशु परमेश्वर का प्रतिरूप है (आयत 15)। यीशु पिता की प्रकृति को प्रकट करने के लिए आया (यूहन्ना 1:18)। उसने समझाया, ''जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजने वाले को देखता है'' (यूहन्ना 12:45); ''जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है'' (यूहन्ना 14:9)। यह लिखने के बाद कि मसीह ''परमेश्वर का प्रतिरूप है'' पौलुस ने इस विचार को यह कहते हुए आगे बढ़ाया कि ''परमेश्वर ... हमारे हृदयों में चमका कि परमेश्वर की महिमा की पहचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो'' (2 कुरिन्थियों 4:4, 6 से)।

यीशु शुद्ध, पवित्र, दयालु, प्रेमी और करुणा से भरा था। उसके गुण वे खूबियां हैं, जो मसीही लोगों को अपने अन्दर लानी आवश्यक हैं। हमें परमेश्वर की पवित्र विशेषताओं को पाने का प्रयत्न करना आवश्यक है। उसने अपने आपको नमूने के रूप में दे दिया है ताकि हम उसके अनुसार चलें (1 पतरस 1:16)। जब हम वैसे चलते हैं जैसे यीशु चलता था (1 यूहन्ना 2:6), तो हम भी परमेश्वर के जैसे बन जाते हैं।

यीशु सृष्टि में पहलौठा है (आयत 15)। ''पहलौठा'' के रूप में यीशु को ''बहुत भाइयों में पहलौठा'' होने के कारण परमेश्वर के परिवार में सबसे आदर का स्थान मिला है (रोमियों 8:29)। मसीही लोग ''मसीह के संगी वारिस हैं'' (रोमियों 8:17)। यीशु मनुष्य बना (इब्रानियों 2:14, 17) ताकि लोग उसके नमूने पर चल सकें। हमें उसके *लिए* जीना आवश्यक है ताकि हम उसके *साथ* रह सकें। वह हमारा बड़ा भाई है, जो अपने भाई-बहनों के लिए अपनी चिंता के कारण, हमारी आवश्यकताओं के लिए उपाय करता और हमारी देखभाल करता है। हम उसकी भलाई, करुणा और प्रेम के लिए उसे सराहते हुए उसकी ओर देखते हैं।

आम तौर पर परिवार के छोटे बच्चे पहलौठे का बड़ा आदर करते हैं। उसके पास आम तौर पर अधिक परिपक्वता और अधिक अनुभव होता है, जिससे गहरी समझ और बेहतर योग्यता मिल सकती है। यदि वह सम्मान के अपने स्वाभाविक पद को गम्भीरता से ले तो वह अपने छोटे भाइयों और बहनों के लिए आदर्श बन सकता है। अपने हर अनुयायी से यीशु को ऐसा ही आदर मिलना चाहिए।

यीशु सब वस्तुओं से पहले है (आयत 17)। यीशु की प्रकृति अनन्त है क्योंकि वह ''अनादिकाल से'' है और ''आदि में परमेश्वर के साथ'' ''जगत की सृष्टि से पहले'' था (मीका 5:2; यूहन्ना 1:2; 17:5)। बीते अनादिकाल से पिता के साथ उसकी उपस्थिति का अर्थ है कि उसे पिता के जितना ज्ञान है। जो कुछ पिता का है वह यीशु का है और जो कुछ यीशु का है वह पिता का है (यूहन्ना 17:10)। इस कारण मसीही लोग आश्वस्त हो सकते हैं कि अनन्त जीवन के सम्बन्ध में मनुष्यजाति के साथ ईश्वरीयता के ज्ञान का हर पहलू उन्हें पता है (यूहन्ना 12:49, 50; 17:8)।

यीशु के पास पहला स्थान है (आयत 18)। सृष्टिकर्त्ता, सारी सृष्टि में पहलौठा, सब बातों में प्रथम और सब बातों को सम्भाले रखने के कारण मसीह को हर बात में पहल दी गई है। जो वह है उसके कारण और संसार में उसके रुतबे के कारण मसीही लोगों को अपने जीवनों में किसी दूसरे को पहल नहीं देनी है। मसीह के अधिकार से ऊपर केवल पिता का अधिकार है (1 कुरिन्थियों 15:27)। कोई भी बात जिसे यीशु से प्राथमिकता दी जाती है उसके सही स्थान

से उसे हटाना है। वह मनुष्यजाति (यूहन्ना 17:2), पृथ्वी और स्वर्ग के अधिकारियों (इफिसियों 1:20, 21), और यहां तक कि स्वर्गीय सेनाओं (1 पतरस 3:22) से भी ऊपर है।

''पहला स्थान'' की उसकी पदवी कलीसिया में भी लागू होती है, क्योंकि वह कलीसिया के ऊपर सिर है (इफिसियों 1:22, 23; 5:23)। मसीही जीवन के हर पहलू में, देह के अंगों के लिए यीशु को सिर के रूप में देखना आवश्यक है। देह के लिए देखभाल और दिशा के लिए सिर की ओर देखना आवश्यक है और सिर को देह की बेहतरी की चिंता होती है।

यीशु में अपने आप में सारी परिपूर्णता है (आयत 19)। संसार और स्वर्गीय जीवों सहित संसार की हर आवश्यकता यीशु में पूरी होती है। मानवीय हृदय की हर आवश्यकता और अभिलाषा उसी में पूरी हो सकती है। सारी परिपूर्णता उसी में वास करती है। यानी आत्मिक हो या शारीरिक क्षेत्र, संसार की हर आवश्यकता को वही पूरा करता है।

मसीह के काम (1:16-18)

यीशु ने आरम्भ में हर चीज़ की सृष्टि की (आयतें 16, 18)। वह जीवन और तत्व का देने वाला है। वर्तमान संसार की कोई भी चीज़ उसके बिना अस्तित्व में नहीं आई (यूहन्ना 1:3)। सृष्टिकर्ता होने के कारण वह ऐसी कोई आकृति जैसा नहीं है जिसे मनुष्य उसको दिखाने के लिए बना सके। पौलुस ने दावा किया कि परमेश्वर निर्बुद्धि तत्व से नहीं बन सकता, क्योंकि बुद्धिमान जीवों को अस्तित्व में लाने वाला वही है (प्रेरितों 17:29)। सृजी गई चीज़ कभी भी अपने सृजनहार से बड़ी नहीं होती। इसी कारण मनुष्यजाति जो कि सृष्टि है, के लिए उसकी पूजा करने के बजाय जिसे परमेश्वर ने सृजा है (रोमियों 1:25) या जो कुछ उसने स्वयं बनाया है उसे मूर्ति बनाकर पूजने के बजाय सृष्टिकर्त्ता की आराधना करनी आवश्यक है।

वह सब वस्तुओं को बनाए रखता है (आयत 17)। मकान को खड़ा रखने के लिए जब तक उसे बनाए रखने वाली चीज़ें न हों चाहे कील हो या कोई और, तब तक वह खड़ा नहीं रह सकेगा। यही बात संसार और आस पास के विश्व के लिए है। यीशु इस पद को अपनी सामर्थ के वचन से स्थिर रखता है (इब्रानियों 1:3)। जो लोग यीशु के बिना हैं, उन्हें अपने संसार को गिरने से बचाने में कठिनाई आती है। जो लोग उसके पास आते हैं उन्हें अंदरूनी शक्ति और आत्मिक विश्राम मिलता है (मत्ती 11:28-30)।

वह कलीसिया का सिर है (आयत 18)। जीवन के लगभग हर उच्च रूप के लिए काम करने के लिए सिर का होना आवश्यक है। सिर शरीर को दिशा, नियन्त्रण और देखभाल प्रदान करता है। यीशु कलीसिया के लिए यही काम करता है। देह की अगुआई के लिए उसकी ओर देखना आवश्यक है। वह वचन के द्वारा निर्देश देकर और आत्मा के द्वारा सहायता देकर कलीसिया की हर आत्मिक आवश्यकता के लिए उपाय करता है (इफिसियों 3:16)।

यीशु की शानदार खूबियां हमें आश्वस्त करती हैं कि उसके राज्य को पहल देने वालों की आवश्यकताओं को नज़रअन्दाज़न नहीं किया जाएगा (मत्ती 6:33)।

टिप्पणियां

[1]एडुअर्ड शवेज़र, *द लैटर टू द कोलोसियंस: ए कमैंट्री,* अनु. एंड्रयू चेस्टर (ज्युरिच: बेनज़ाइगर वरलग, 1976; रिप्रिंट, मिनियापोलिस: आगसबर्ग पब्लिशिंग हाउस, 1982), 67–68. [2]विलियम हैंड्रिक्सन, *एक्सपोज़िशन ऑफ़ कोलोसियंस एंड फिलेमोन,* न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1964), 72. [3]ए. टी. रॉबर्टसन, *पॉल एंड द इंटलेक्चुअल्स: द एपिस्टल टू द कोलोसियंस,* संशो. व संपा. डब्ल्यू. सी. स्ट्रिकलैंड (नैशविल्ल: ब्रॉडमैन प्रैस, 1959), 44. [4]एस. सी. जी. माउल, *द एपिस्टल टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* द कैम्ब्रिज बाइबल फॉर स्कूल्स एंड कॉलेजस (कैम्ब्रिज: यूनिवर्सिटी प्रैस 1893; रिप्रिंट, 1902), 77. [5]वही। [6]वाच टावर बाइबल एंड ट्रैक्ट सोसायटी ऑफ़ पैनसीविनया, *यू कैन लिव फॉरएवर इन पैराडाइस ऑर अर्थ* (ब्रूकलिन, न्यू यॉर्क: वाचटावर बाइबल एंड ट्रैक्ट सोसायटी ऑफ़ न्यू यार्क, 1982), 58. [7]*द न्यू वर्ल्ड ट्रांसलेशन ऑफ़ द होली स्क्रिप्चर्स* (ब्रूकलिन, न्यू यॉर्क: वाचटावर बाइबल एंड ट्रैक्ट सोसायटी ऑफ़ न्यू यार्क, 1961), 1274. [8]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो 2000), 194. [9]*द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संस्क., संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 3:606 में सी. बी. होच, जूनि. ''ओनली बिगॉटन।'' [10]ई. के. सिम्पसन एंड एफ. एफ. ब्रूस, *कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द इफिसियंस एंड द कोलोसियंस,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1957), 197.

[11]रॉबर्ट जी. ब्रेचर एंड यूजीन ए निदा, *ए ट्रांसलेटर हैंडबुक ऑन पॉल'स लैटर टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* हेल्पस फॉर ट्रांसलेटर (न्यू यार्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटी, 1977), 24. [12]डेविड एम. हे, *कोलोसियंस,* अबिंग्डन न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (नैशविल्ल: अबिंग्डन प्रैस 2000), 58. [13]सिम्पसन एंड ब्रूस 199, एन. 85. [14]ब्रेचर एंड निडा, 24. [15]जे. बी. लाइटफुट, *सेंट पॉल'स एपिस्टल टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* संशो. (लंदन: मैकमिलन एंड कं., 1916), 153. [16]रॉबर्टसन, 50. [17]वही, 49–50. [18]ब्रूस, 205. [19]देखें मत्ती 28:18; 1 कुरिन्थियों 15:25–27; इफिसियों 1:20–23; फिलिप्पियों 2:10, 11; 1 पतरस 3:22; प्रकाशितवाक्य 1:5; 12:5. [20]आर. सी. लूका, *द मैसेज ऑफ कोलोसियंस एंड फिलेमोन: फुलनेस एंड फ्रीडम,* द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-यूनिवर्सिटी प्रैस 1980), 53.

[21]हे, 62. [22]हैंड्रिक्सन, 81. [23]हरबर्ट एम. कारसन, *द एपिस्टल ऑफ़ पॉल टू द कोलोसियंस एंड फिलेमोन: एन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 46–47. [24]हे, 53.